॥ ओ३म् ॥

RNI/MPHIN/2009-28723
डाक पंजीयन संख्या MP/IDC/1533/2020-22

वैदिक राष्ट्र

वेद, वैदिक साहित्य, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अनुसंधानात्मक मासिक पत्रिका

वर्ष-13, अंक-06 इन्दौर, अक्टूबर 2021 मूल्य 30 रुपए
प्रकाशन दिनांक - 28 अक्टूबर 2021 । डाक प्रेषण दिनांक - 30 अक्टूबर 2021

वयं स्याम पतयो रयीणाम् (ऋग्वेद 10/121/10)

हम सभी उत्तम धन ऐश्वर्यों के स्वामी होवें

शारदीय नवसस्येष्टि पर्व दीपावली

की

हार्दिक शुभकामनाएं

ओम् इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ॥

-ऋ. 2.21.6

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
संपादक- वैदिक राष्ट्र मासिक पत्रिका

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानंद सरस्वती

महर्षि दयानंद सरस्वती

के

138वें निर्वाणोत्सव

पर

शत् शत् नमन

एवं

दीपावली

की

हार्दिक शुभकामनाएं

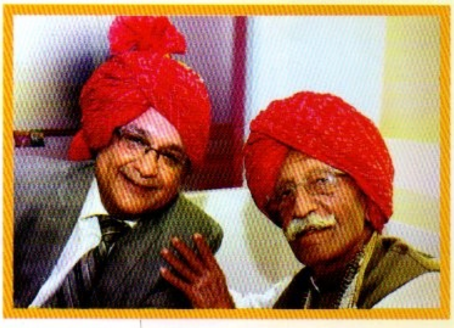

महाशय राजीव गुलाटी

(एम.डी.एच समाले)

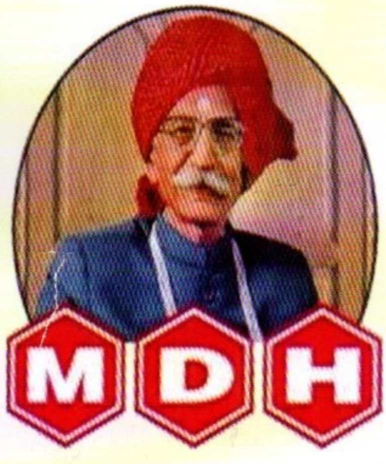

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

ESTD. 1919 E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

॥ ओ३म् ॥

RNI/MPHIN/2009-28723
डाक पंजीयन संख्या।
MP/IDC/1533/2020-22

वैदिक राष्ट्र (मासिक पत्रिका)
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद
वयं राष्ट्रे जागृयाम:

वैदिक राष्ट्र

वेद, वैदिक साहित्य, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अनुसंधानात्मक मासिक पत्रिका

संपादक – डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार E-mail: vaidikrashtra@gmail.com

वर्ष – 13 अंक – 06 अक्टूबर 2021

❖ कार्यकारी संपादक ❖
राजवीर सिंह (झारखंड)
❖ सहसंपादक ❖
संदीप शजर (दिल्ली)
डॉ. विवेक आर्य (दिल्ली)
❖ प्रबंध संपादक ❖
गायत्री सोलंकी, (इन्दौर, म.प्र.)
प्रणवीर शास्त्री (बुलंदशहर, उ.प्र.)
❖ संपादक मंडल ❖
अमरसिंह वाचस्पति (ब्यावर, राजस्थान)
डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार (हरिद्वार, उत्तराखंड)
श्रीमती मनीषा (शांति) विद्यालंकार (म.प्र.)
योगाचार्य उमाशंकर (सूरत, गुजरात)।
वीरेन्द्र सरदाना (दिल्ली)
सुखबीर शास्त्री (मुम्बई)
सत्यवीर (हरियाणा)
पवन कुमार शास्त्री (मथुरा)
सुनील कुमार शर्मा (शुजालपुर, म.प्र.)
नोट :– सभी पद अवैतनिक हैं।
ग्राफिक्स डिजाईनर - दर्शन बोरडे

अनुक्रमणिका

संपादकीय	-	02
वेदाऽमृतम्	-	03
लाल बहादुर शास्त्री	-	04-05
अब्दुल कलाम देश के महान	-	06-07
पेरिन बेन कैप्टेन	-	08-09
गणेश शंकर विद्यार्थी	-	10-11
यज्ञ-ध्वनि-प्रदूषण निवारक	-	12-13
यजुर्वेद की महिमा	-	14
सुखी जीवन के सूत्र	-	15-16
विज्ञापन	-	17
नवसस्येष्टि...	-	18-20
शारदीय नवसस्येष्टि	-	21-24
ऋषि, मुनि, साधु...	-	25-27
विष ही महर्षि की मृत्यु का कारण	-	28-32

❖ मुख्य कार्यालय ❖
219, संचार नगर एक्स, कनाड़िया रोड़, इंदौर (म.प्र.), मो. 09977967777, 09977987777, 09202213410
Email: vaidikrashtra@yahoo.com, Website: www.vaidikrashtra.com
❖ दिल्ली कार्यालय ❖
संदीप शजर – एफ-5, विनायक अपार्टमेंट बुराड़ी (संतनगर) दिल्ली, मो. 09873534060
बैंक का नाम- बैंक ऑफ महाराष्ट्र- शाखा: कनाड़िया रोड़, इंदौर, खाता क्रं. 6003657384, IFSC Code: MAH0001396

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार द्वारा आर.टेक ग्राफिक्स 864/9, नेहरु नगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर से प्रकाशित। आर.एन.आई. नं./एम.पी.एच.आई.एन/2009-28723

'वैदिक राष्ट्र' में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र ''इन्दौर न्यायालय'' ही रहेगा।

संपादकीय

गायत्री की जप विधि

गायत्री का मानसिक जप और ध्यान स्वेच्छा, स्वशक्ति और स्वव्रत के अनुसार करे। उदाहरण के रुप में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में से किसी एक का लक्ष्य करो। उसको लक्ष्य करके गायत्री का जप और ध्यान नीचे लिखे प्रकार से करें -

ओ३म्- प्रणव का उच्चारण करके यह भावना बनाओ कि मैं प्रभु के संरक्षण में इस समय बैठा हूँ। घोर जंगल में भयंकर रात्रि में अपने चारों ओर प्रचण्ड अग्नि जला लो और उसके संरक्षण में बीच में बैठ जाओ फिर कोई जंगली भयंकर-से-भयंकर जन्तु तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेगा। इसी प्रकार ओ३म्- का उच्चारण करके ओ३म् की रक्षक मानकर उसके संरक्षण में अपनी स्थिति की भावना करो।

भू:- सबसे अधिक प्यारा सबको अपना प्राण होता है, यदि प्राण निकल जावे तो शरीर मुर्दा कहाता है। इसी प्रकार हमारे आत्मा का प्राण प्रभु, जिसके अंदर से प्रभु निकल गये वह आत्मा भी मुर्दा-जैसा है। ऐसा प्रियतम प्रभु को समझने की कल्पना करो, जिसके बिना तुम क्षणभर भी न रह सको, ऐसा प्यार प्रभु का बनाओ।

भुव:- सोचो किस लक्ष्य को सामने रखकर गायत्री-जप कर रहे हो, उस लक्ष्य की प्राप्ति में क्या चाहिए, तत्सुख-स्वरुप प्रभु को विचारो परन्तु माँगो मत, शान इसी में है।

सवितु:- प्रभु ने मुझे पैदा किया है। पिता जैसे पुत्र की प्रतिक्षण चिन्ता रखता है और प्रत्येक कर्त्तव्य में प्रेरणा करता रहता है, वैसे ही परमपिता मेरे हैं, मुझे चिन्ता क्या है।

देवस्य- जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मैं जप कर रहा हूँ उस लक्ष्य को प्राप्त कराकर वे प्रभु मुझे आनन्द देंगे ही।

वरेण्यम्- अब तो मैंने प्रभु के स्वरुप को स्वीकार कर लिया, हृदय में ध्यान करके धारण किये बैठा हूँ। अब तो सब कुछ हो जाएगा।

तत्+भर्ग:-प्रभु का वह स्वरुप जो सृष्टि से परे भी है, वह इन्द्रियों से अप्रत्यक्ष है, परन्तु इसकी मुझे क्या चिंता ? इन्द्रियों से अतिरिक्त भी वस्तुएँ मेरे पास हैं, जिनके द्वारा मैंने उस स्वरुप को अब स्वात्मा से-

धीमहि- धारण कर लिया है, अब ध्यान में आ गया है, अब काबू में आ गया है। अब मेरा कर्त्तव्य समाप्त, अब तो उसका कर्त्तव्य शेष है-

धियो यो न: प्रचोदयात्- अब वह मेरी बुद्धि को चलाएगा और उसके द्वारा मुझे स्वलक्ष्य प्राप्त हो जाएगा। मैंने उस स्वरुप को धारण कर लिया है अब वह मुझे चलाएगा, मैंने उस स्वरुप को धारण कर लिया है अब वह मुझे चलाएगा, इस प्रकार के विचार का ताँता जप में लगा चले। इस प्रकार का जप माला लेकर नहीं हो सकता। माला हाथ में होगी तो भी हाथ से छूट जाएगी। जप में अधिक संख्या की चिन्ता न करे अधिक समय लगाने की और ध्यान की चिंता करें। यह हमने उदाहरण के रुप में एक प्रकार ध्यान का बताया है। गायत्री-मन्त्र में अपने ध्यान के प्रकार को उपासक स्वयं ढूँढे और समझे, क्योंकि स्वत: अनुभव ही जप-तप में अनुभूति के द्वारा सिद्धि प्राप्त होती है। इस गायत्री जप को प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने उपदिष्ट किया था और अपने अनुभव के द्वारा ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषियों ने हमें गायत्री जप का महत्व बताया। इसी प्रकार के जप के वे फल हैं जो समस्त शास्त्रों में वर्णन किये गये हैं। अन्यथा प्रकार से करने से फल प्राप्ति न होने से शास्त्रों पर अविश्वास हो जाता है, अत: इस परम्परा को फिर से जीवित करना चाहिए। इसी जप के द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सबकी प्राप्ति हो सकती है जैसा कि समर्पण वाक्य में ऋषि दयानन्द ने लिखा है- 'हे ईश्वर... अनेन जपोपासनादिकर्मणा' उसको बोलकर नमस्कार करके कर्म को समाप्त करें। जैसा आगे पंचमहायज्ञविधि में वर्णित है। गायत्री मंत्र में स्तुतिप्रार्थनोपासना- **स्तुति-** गायत्री मंत्र की महाव्याहृतियों में और सविता, देव, वरेण्य, आदि शब्दों में ईश्वर की स्तुति है। **प्रार्थना-** धियो यो न: प्रचोदयात् में प्रभु से प्रार्थना है कि आप हमारी बुद्धियों को चलाएँ। **उपासना-** भर्गो देवस्य धीमहि-यह वाक्य उपासना का बोधक है। इसीलिए संस्कारविधि में महर्षि ने लिखा है कि- **''गायत्रीमंत्र का अर्थविचारपूर्वक परमात्मा की स्तुतिप्रार्थनोपासना करे।''**

सत्यार्थप्रकाश में गायत्री के प्रसंग में महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्द इस प्रकार हैं- **''गायत्रीमंत्र का उच्चारण, अर्थज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल-चलन को करे।''** - सत्यार्थ. तृतीय समुल्लास। ऋषि का अभिप्राय यह है कि केवल गायत्रीमंत्र के शब्दों को बार-बार उच्चारण करनेमात्र से कुछ लाभ नहीं होगा, जबतक कि मन्त्र का अर्थ न जानता हो और तदनुकूल उसका आचरण न हो। गायत्रीमंत्र के जप करनेवाले के लिए यह आवश्यक है कि वह संस्कृतभाषा का इतना अभ्यास अवश्य कर ले कि जिससे गायत्री उच्चारण के साथ अर्थ प्रतीत होवे। कोई व्यक्ति यदि यह कहे कि यह तो बड़ा कठिन काम है तो क्या वह सरलता से ही गायत्री अनुष्ठान के महान् लाभों को प्राप्त कर लेना चाहता है। महती सिद्धियाँ कठिन उपायों से ही प्राप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त जब वह कहता है कि मैं परमात्मा के स्वरुप को धारण करता हूँ तो वह वास्तव में प्रभु के स्वरुप को हृदय में धारण करे। धारण करता हूँ यह कहनेमात्र से काम नहीं चलेगा। इस प्रकार से गायत्रीमंत्र जप करके प्रभु के आनन्द की ओर अग्रसर हो सकते है।

वेदाऽमृतम्

हे परमेश्वर ! मुझे सर्वदा अभय बना दे

इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत् ।
जेता शत्रून् विचर्षणिः ॥

–ऋ. 2 | 41 | 12; अथर्व. 20 | 57 | 10

ऋषिः– **गृत्समदः** ॥ देवता– **इन्द्रः** ॥ छन्दः– **निचृदगायत्री** ॥

विनय– मैं डरता क्यों हूँ? परमेश्वर (इन्द्र) की इस सृष्टि में रहते हुए तो किसी भी काल में, किसी भी देश में भय का कुछ भी कारण नहीं है। क्या मैं अपने शत्रुओं से डरता हूँ? मेरा तो इस इन्द्र की सृष्टि में कोई शत्रु नहीं होना चाहिए। मेरा कोई शत्रु है। ही नहीं। हाँ, एक अर्थ में पाप करनेवाले मनुष्यों को शत्र कहा जा सकता है, क्योंकि पाप करना परमात्मा से शत्रुता करना हैकृ पाप करना ईश्वरीय शासन के प्रति विद्रोह करना है, परन्तु ऐसे पाप करनेवाले भाई से भी मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? यह ठीक है कि ऐसे पाप करनेवाले भाई तब मुझे अपना शत्रु समझ लेंगे जब कभी उनके पाप का विरोध करना मेरा कर्त्तव्य हो जाएगा और तब वे मुझे अपना शत्रु मानकर नाना प्रकार से सताने–कष्ट देने को भी उद्यत होंगे, परन्तु उस पापी भाई के सताने से भी मेरा क्या बिगड़ेगा? वह तो बेचारा स्वयं परमात्मदेव का मारा हुआ है। परमात्मा तो स्वभावतः **'शत्रून् जेता'** है। उससे शत्रुता करके, अर्थात् पाप करके कौन बचा रह सकता है? यदि यह विश्वास पक्का हो जाए कि परमात्मा 'शत्रून् जेता' है तो अज्ञानी, पापी पुरुषों की ओर से आये हुए बड़े–से–बड़े सन्तापों का, घोर–से–घोर अत्याचारों का भी भय हट जाए। ऐसा विचार थोड़ी देर के लिए आने पर ही एकदम निर्भयता आ जाती है और फिर उसे सचमुच 'विचर्षणि' समझ लेने पर तो कोई भय रहता ही नहीं। देखो, वह 'विचर्षणि' परमेश्वर सब प्राणियों के सब कर्मों को ठीक–ठीक देखता हुआ पाप और पुण्य का फल दे रहा है। वह ठीक ढङ्ग से ठीक समय प्रत्येक पाप का विनाश कर रहा है– पाप को परास्त कर रहा है। तब मुझे डरने की क्या आवश्यकता है? मुझे तो कोई दुःख–क्लेश तभी मिलेगा जब मेरा ही कोई पापकर्म उदय होगा, नहीं तो किसी अन्य मनुष्य की चाहना से मुझे क्लेश कभी नहीं हो सकता और यदि मेरे अपने ही पाप–कर्मों के कारण कोई क्लेश आता है तो वह तो आना ही चाहिए। उसे मैं प्रसन्नता से सह–सहकर निष्पाप और अनृण होता जाऊँगा। वह क्लेश उस "शत्रु' का भेजा हुआ नहीं है, किन्तु मेरे प्यारे परमेश्वर का भेजा है, उसका तो मुझे स्वागत करना चाहिए। एवं, इस संसार में चारों दिशाओं में, मेरा अब कोई दःख दे सकनेवाला शत्र नहीं रहा है। जब से प्रभु को 'विचर्षणि' और 'शत्रून् जेता' जान लिया है, तब से मैं अभय हो गया हूँ–सब ओर से अभय हो गया हूँ–किसी दिशा से कोई भय नहीं। अभय, अभय!

शब्दार्थ– इन्द्रः=इन्द्र परमेश्वर ! मुझे **सर्वाभ्यः आशाभ्यः परि**=सब दिशाओं से **अभयं करत्**=अभय कर दे। **शत्रून् जेता**=जो परमेश्वर शत्रुओं को जीतनेवाला है, **विचर्षणिः**=और सब–कुछ [प्रत्येक प्राणी के प्रत्येक कर्म को] पूरी तरह देखनेवाला है।

लाल बहादुर शास्त्री

जन्म– 02 अक्टूबर 1904 | मृत्यु– 11 जनवरी 1966

लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर, 1904 को मुगलसराय, उत्तरप्रदेश में 'मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव' के यहां हुआ था। उनकी माता का नाम 'रामदुलारी' था।

लाल बहादुर शास्त्री के पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। ऐसे में सब उन्हें 'मुंशी जी' ही कहते थे। बाद में उन्होंने राजस्व विभाग में क्लर्क की नौकरी कर ली थी। परिवार में सबसे छोटा होने के कारण बालक लालबहादुर को परिवार वाले प्यार से 'नन्हे' कहकर ही बुलाया करते थे। जब नन्हे अठारह महीने के हुए तब दुर्भाग्य से उनके पिता का निधन हो गया। उनकी मां रामदुलारी अपने पिता हजारीलाल के घर मिर्जापुर चली गईं। कुछ समय बाद उसके नाना भी नहीं रहे। बिना पिता के बालक नन्हे की परवरिश करने में उसके मौसा रघुनाथ प्रसाद ने उसकी मां का बहुत सहयोग किया।

ननिहाल में रहते हुए नन्हे ने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद की शिक्षा हरिश्चंद्र हाई स्कूल और काशी विद्यापीठ में हुई। काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि मिलते ही शास्त्री जी ने अपने नाम के साथ जन्म से चला आ रहा जातिसूचक शब्द श्रीवास्तव हमेशा के लिए हटा दिया और अपने नाम के आगे शास्त्री लगा लिया।

इसके पश्चात 'शास्त्री' शब्द 'लालबहादुर' के नाम का पर्याय ही बन गया। बाद के दिनों में 'मरो नहीं, मारो' का नारा लालबहादुर शास्त्री ने दिया जिसने एक क्रांति को पूरे देश में प्रचंड किया। उनका दिया हुआ एक और नारा 'जय जवान–जय किसान' तो आज भी लोगों की जुबान पर है। भारत में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन के एक कार्यकर्ता लाल बहादुर थोड़े समय (1921) के लिए जेल गए। रिहा होने पर उन्होंने एक राष्ट्रवादी विश्वविद्यालय काशी विद्यापीठ (वर्तमान में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ) में अध्ययन किया और स्नातकोत्तर शास्त्री (शास्त्रों का विद्वान) की उपाधि पाई। संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे भारत सेवक संघ से जुड़ गए और देशसेवा का व्रत लेते हुए यहीं से अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत की।

शास्त्री जी सच्चे गांधीवादी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व आंदोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उसके परिणामस्वरूप उन्हें कई बार जेलों में भी रहना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आंदोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन उल्लेखनीय हैं।

शास्त्री जी के राजनीतिक दिग्दर्शकों में पुरुषोत्तमदास टंडन और पंडित गोविंद बल्लभ पंत के अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। सबसे पहले 1929 में इलाहाबाद आने के बाद उन्होंने टंडन जी के साथ भारत सेवक संघ की इलाहाबाद इकाई के सचिव के रूप में काम करना शुरू किया।

इलाहाबाद में रहते हुए ही नेहरू जी के साथ उनकी निकटता बढ़ी। इसके बाद तो शास्त्री जी का कद निरंतर बढ़ता ही चला गया और एक के बाद एक सफलता की सीढियां चढ़ते हुए वे नेहरू जी के मंत्रिमंडल में गृहमंत्री के प्रमुख पद तक जा पहुंचे।

1961 में गृह मंत्री के प्रभावशाली पद पर नियुक्ति के बाद उन्हें एक कुशल मध्यस्थ के रूप में प्रतिष्ठा मिली। तीन साल बाद जवाहरलाल नेहरू के बीमार पड़ने पर उन्हें बिना किसी विभाग का मंत्री नियुक्त किया गया और नेहरू की मृत्यु के बाद जून 1964 में वह भारत के प्रधानमंत्री बने।

उन्होंने अपने प्रथम संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि उनकी पहली प्राथमिकता खाद्यान्न मूल्यों को बढ़ने से रोकना है और वे ऐसा करने में सफल भी रहे। उनके क्रियाकलाप सैद्धांतिक न होकर पूरी तरह से व्यावहारिक और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप थे। निष्पक्ष रूप से देखा जाए तो शास्त्री जी का शासन काल बेहद कठिन रहा।

भारत की आर्थिक समस्याओं से प्रभावी ढंग से न निपट पाने के कारण शास्त्री जी की आलोचना भी हुई, लेकिन जम्मू–कश्मीर के विवादित प्रांत पर पड़ोसी पाकिस्तान के साथ 1965 में हुए युद्ध में उनके द्वारा दिखाई गई दृढ़ता के लिए उनकी बहुत प्रशंसा हुई।

ताशकंद में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्ध न करने की ताशकंद घोषणा के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें मरणोपरांत वर्ष 1966 में भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया। शास्त्रीजी को उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिए आज भी पूरा भारत श्रद्धापूर्वक याद करता है।

॥ ओ३म् ॥

गुरु विरजानंद वैदिक ट्रस्ट (पंजी.)

द्वारा संचालित

गुरु विरजानंद वैदिक गुरुकुल, इन्दौर (म.प्र.)

को

आपका सहयोग अपेक्षित है।

न्यूनतम 1100/– रुपये सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक खाते में

अथवा

9977987777

गूगल पे, फोन पे, पेटीएम में प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

सहयोग राशि के लिये

Bank Name - HDFC
Bank - Guru Virajanand Vaidik Trust
A/C - 50200034013635,
IFSC - HDFC0001772

Bank Name - HDFC
Bank - Guru Virjanand Vaidik Gurukul
A/c - 50200061946934
IFSC - HDFC0001772

PhonePe Google Pay paytm 9977987777

आपका अमूल्य सहयोग वैदिक संस्कृति, सनातन धर्म व समाज की दशा व दिशा निर्धारण करने में महती भूमिका निभाएगा। धन्यवाद !

कार्यालय– गुरु विरजानंद वैदिक ट्रस्ट

आर्य समाज- 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016

Web.: www.guruvirjanandgurukul.com, E-mail: guruvirjanandgurukul@gmail.com

✆9977967777, 9977987777

अब्दुल कलाम देश के महान वैज्ञानिक

जन्म– 15/10/1931, देहांत– 27/07/2015

अभियंता, शिक्षक और भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें राष्ट्रपति मरहूम अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम मसऊदी अपनी विद्वता, वैज्ञानिक दृष्टि, दूरदर्शिता, लेखकीय क्षमता और मृदु स्वभाव के कारण देश के सबसे लोकप्रिय राष्ट्रपतियों में से एक थे। तमिलनाडु के एक मछुआरे परिवार से देश के राष्ट्रपति की कुर्सी तक पहुंचे डॉ. कलाम का जीवन परिकथाओं–सा रोमांचक है। यह बात कम लोगों को पता है कि वे एक अच्छे संगीतज्ञ और कवि भी थे। 'अग्नि की उड़ान' उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक से ज्ञात होता है कि किस कदर एक मछुआरे का बेटा ट्रेन के द्वारा फेंके गए अखबारों के बंडल को सही करके वितरण करने के बाद स्कूल जाया करता था। बचपन में अखबार बांटने वाला वही बच्चा अपने जीवन में ऐसी ऊंचाई छू लेता है कि वो एक दिन दुनिया के समस्त अखबारों की सुर्खियां बटोरता नजर आता है। डॉ. कलाम की कहानी– वास्तव में डॉ. कलाम का जीवन, समाज के अंतिम व्यक्ति के राष्ट्र का प्रथम नागरिक बनने की कहानी है। वे 15 अक्टूबर 1931 को पवित्र रामेश्वरम धाम की माटी में जन्में, पले, बढ़े और समुद्र–सा विशाल और अगाध व्यक्तित्व ग्रहण करते गए। न अभाव उनकी रुकावट बने, न गरीबी उनकी बेड़ियां।

बचपन में उनकी नन्ही तेजस्वी आंखों ने जो स्वप्न देखा, वह निरंतर बड़े से और बड़ा होते हुए इतना बड़ा हो गया कि सारा भारत विकसित राष्ट्रों की प्रथम पंक्ति में अपने दम पर स्वयं को खड़ा देखने लगा और वे उसे साकार करने में न केवल स्वयं जुटे, बल्कि उन्होंने बच्चों और युवा होते तरुणों की करोड़ों आंखों में वह स्वप्न बांट दिया। 'तेजस्वी मन' और 'अग्नि की उड़ान' केवल उनकी किताबों के नाम नहीं हैं, बल्कि यह तो डॉ. कलाम के ही दूसरे नाम हैं, क्योंकि वे केवल लेखक ही नहीं, सर्जक भी थे। रक्षा वैज्ञानिक के रूप में रक्षक भी थे और शिक्षा मनीषी के रूप में शिक्षक भी। उनके अंदर एक महामानव बसता था। वे गीता को पढ़ते ही नहीं, जीते भी थे। उनके मस्तिष्क में विज्ञान था तो हृदय में कला उनमें सदैव एक सच्चे मानव को गढ़ते रहती थी। राष्ट्रभक्ति उनकी रगों में रक्त बनकर बसी थी। अपने चिंतन से वे भावी पीढ़ी को स्वप्न दे गए तो वर्तमान पीढ़ी को अभय।

डॉ. कलाम का जीवन, समाज के अंतिम व्यक्ति के राष्ट्र का प्रथम नागरिक बनने की कहानी है। डॉ. कलाम का जीवन, समाज के अंतिम व्यक्ति के राष्ट्र का प्रथम नागरिक बनने की कहानी है। –

मिसाइल मैन और शिक्षक का विशाल जीवन– इस 'मिसाइलमैन' को भारत सरकार ने 'पद्मभूषण', 'पद्म विभूषण' और 'भारतरत्न' देकर इन सम्मानों की ही गरिमा बढ़ाई। वे कहते थे – 'मैं शिक्षक हूं और इसी रूप में पहचाना जाना चाहता हूं।' और सचमुच अपनी अंतिम श्वास लेते समय वे विद्यार्थियों के बीच ही तो थे एक शिक्षक के रूप में। वे हमारी आंखों में आंसू नहीं, स्वप्न देखना चाहते थे। वे कहा करते थे – 'सपने वे नहीं होते जो सोते वक्त आते हैं, बल्कि सपने तो वे होते हैं जो कभी सोने ही नहीं देते।' युवाओं के बूते देश में नई क्रांति लाने का उनका यह ध्येय नवीन भारत की आधारशिला थी। सचमुच डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जैसा व्यक्तित्व का इस धरती पर जन्म लेना भारत के लिए गौरव की बात है। एक बार डॉ. कलाम जब स्कूल के बच्चों को लेक्चर दे रहे थे तभी बिजली में कुछ गड़बड़ी हो गई।

डॉ. कलाम उठे और सीधा बच्चों के बीच चले गए और उन्हें घेरकर खड़े हो जाने के लिए कहा।

इस तरह से उन्होंने लगभग चार सौ बच्चों के साथ बिना माइक के संवाद किया। राष्ट्रपति बनने के कुछ दिन बाद वो किसी इवेंट में शरीक होने केरल राजभवन त्रिवेंद्रम गए। उनके पास अपनी तरफ से किन्हीं दो लोगों को बुलाने का अधिकार था, और आप जानकर हैरान होंगे कि उन्होंने किसे बुलाया–एक मोची को और एक छोटे से होटल के मालिक को। दरअसल, डॉ. कलाम बतौर वैज्ञानिक काफी समय त्रिवेंद्रम में रहे थे, और तभी से वे इन लोगों को जानते थे, और किसी नेता या सेलेब्रिटी की बजाए उन्होंने आम लोगों को महत्व दिया। कलाम का मानना था कि युवा पीढ़ी ही देश की असली पूंजी है। कलाम का मानना था कि युवा पीढ़ी ही देश की असली पूंजी है।

सादगी की मिसाल कलाम– जब कोई प्रेसिडेंट बन जाता है तो सरकार उसकी सारी जरूरतों का ध्यान रखती है, पद से हटने के बाद भी। यही वजह रही कि डॉ. कलाम ने अपनी सारी सेविंग्स 'प्रोवाइडिंग अर्बन एमिनिटीज इन रूरल एरियाज' के लिए दान कर दी। जब डॉ. कलाम डी.आर.डी.ओ में थे तब उन्हें एक कॉलेज इवेंट के लिए बतौर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। लेकिन डॉ. कलाम रात में ही आयोजन स्थल का चक्कर लगाने पहुंच गए, वहां जाकर उन्होंने कहा कि वो उन लोगों से मिलना चाहते हैं जो पर्दे के पीछे रहकर इस आयोजन को सफल बनाने में लगे हैं, इसलिए इस वक्त आ गए।

27 जुलाई 2015 को शाम भारत माता का यह महान सपूत उसकी गोद में सदा के लिए सो जाने के लिए हमसे विदा ले गया। विश्व ने एक महान वैज्ञानिक को खोया। देश ने अपने पूर्व राष्ट्रपति को तो खोया ही, पर साथ ही करोड़ों बच्चों का भी उनके प्यारे 'काका कलाम' का बिछोह था यह।

युवा पीढ़ी को सराहते थे कलाम– कलाम का मानना था कि युवा पीढ़ी ही देश की असली पूंजी है। अतः वे युवाओं के बूते देश को विकसित बनाने के प्रति संकल्पित थे। उन्होंने देश को विकसित बनाने के सपने को साकार करने के लिए कई जरूरी चीजों के बारे में इंडिया विजन 2020 के नाम से डॉक्यूमेंट में जानकारी दी थी। बाद में उन्होंने इंडिया 2020: ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम नाम से इस पर किताब भी लिखी।

कलाम ने 2020 तक भारत को विकसित बनाने के लिए जिन पांच अहम बातों पर जोर दिया था उनमें कृषि और फूड प्रोसेसिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा और स्वास्थ्य, इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी और शिक्षा के क्षेत्र में ई–गवर्नेंस को बढ़ावा देने के साथ ही न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी का विकास शामिल था।

वे देश में खेती और फूड प्रोसेसिंग का उत्पादन दोगुना करने, विद्युतीकरण को गांवों तक ले जाने और सोलर पावर को बढ़ाने, अशिक्षा को खत्म करने, सामाजिक सुरक्षा और लोगों को स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध कराने, टेलीकम्युनिकेशन और टेलीमेडिसिन जैसी टेक्नॉलजीज को बढ़ावा देने को भारत के विकसित बनने के लिए अनिवार्य मानते थे।

आज सरकार को इन पांचों बातों पर काम करने की जरूरत है। यह न केवल कलाम के स्वप्न को साकार करने के लिए जरूरी है, बल्कि देश के नागरिकों को एक समृद्ध व खुशहाल जीवन उपलब्ध कराने के लिए भी आवश्यक है। यह बेहद चिंताजनक है कि कलाम के भरोसे वाली युवा पीढ़ी देश के विकास में अपना योगदान देने के बजाय भटकाव की ओर अग्रसर हो रही है, इसलिए युवा उर्जा के संतुलित उपयोग का विषय सरकार की चिंताओं में अग्रणी होना चाहिए। यदि हम समय रहते हैं युवा शक्ति का सार्थक उपयोग विज्ञान, अनुसंधान और तकनीक के क्षेत्र में करने में सफल हो जाते हैं तो भारत को विकसित होने से कोई रोक नहीं सकता।

पेरिन बेन कैप्टेन

जन्म– 12/10/1888, देहांत– 1958

पेरिन बेन कैप्टेन दादाभाई नौरोजी की पोती, जिन्होंने आजीवन देश की सेवा की! भारतीय स्वतंत्रता के लिए बहुत से लोगों ने अपना जीवन समर्पित किया था। यदि कभी बैठकर अतीत के पन्नों को खंगाला जाये तो आपको ऐसी बहुत सी भूली–बिसरी कहानियां मिलेंगी, जिनके बारे में हमारे इतिहासकार शायद लिखना भूल गये, ख़ासकर महिला स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में।

चंद महिला स्वतंत्रता सेनानिओं के अलावा आपने शायद ही किसी के बारे में ज्यादा जाना व पढ़ा हो। ऐसी ही कहानी है दादाभाई नौरोजी की पोती पेरिन बेन कैप्टेन की, जो शायद इतिहास की स्मृतियों से कहीं खो सी गयी है। पर आज पर हम आपको रूबरू करायेंगे भारत की इस बेटी से, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता में अहम भूमिका निभाई थी!

12 अक्टूबर 1888 को गुजरात के कच्छ जिले के मांडवी में जन्मीं पेरिन बेन, दादाभाई नौरोजी के सबसे बड़े बेटे अर्देशिर की सबसे बड़ी बेटी थीं। उनके पिता एक डॉक्टर थे। बहुत कम उम्र में ही पेरिन ने अपने पिता को खो दिया था। साल 1893 में, जब वे महज पांच साल की थी तो उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। घर में हमेशा से पढ़ाई–लिखाई के माहौल के चलते पेरिन का झुकाव भी शिक्षा की तरफ़ था। उनकी शुरूआती पढ़ाई बॉम्बे (अब मुंबई) से हुई। इसके बाद वे आगे की पढ़ाई के लिए फ्रांस चली गयी।

पेरिस की सोह्बन न्युवेल यूनिवर्सिटी से उन्होंने फ्रेंच भाषा में अपनी डिग्री पूरी की। पेरिस में रहते समय वे भिकाजी कामा के सम्पर्क में आयीं। भिकाजी ने उन्हें बहुत प्रभावित किया और वे उनके साथ उनकी गतिविधियों में शामिल होने लगीं। भिकाजी कामा और सावरकर– यहीं से पेरिन की एक स्वतंत्रता सेनानी बनने की शुरुआत हुई। बताया जाता है कि जब विनायक दामोदर सावरकर को लन्दन में ब्रिटिश पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था तो उन्हें छुड़वाने में पेरिन बेन ने अहम भूमिका निभाई थी। इसके बाद उन्होंने साल 1910 में सावरकर और भिकाजी के साथ ब्रुसेल्स में मिस्र की राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लिया था।

वे पेरिस में भी विभिन्न संगठनों से जुड़ी हुई थीं, जिनमें से एक पॉलिश इ–माइग्रे था। इनके साथ मिलकर उन्होंने रूस में ज़ारिस्ट शासन के खिलाफ़ विरोध किया।

साल 1911 में वे भारत लौटीं। यहाँ वापिस आने के बाद उन्हें महात्मा गाँधी से मिलने का मौका मिला। गाँधी जी के आदर्शों से प्रभावित पेरिन ने अपना जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया। वे गाँधी जी के साथ मिलकर अंग्रेजी शासन के खिलाफ़ गतिविधियाँ करने लगीं। इस दौरान उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। लेकिन वे पीछे नहीं हटीं। साल 1920 में उन्होंने स्वदेशी अभियान का समर्थन किया और उन्होंने खादी पहनना शुरू कर दिया। और 1921 में उन्होंने गांधीवादी आदर्शों पर आधारित औरतों के अभियान, राष्ट्रीय स्त्री सभा के गठन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साल 1925 में पेरिन ने धुनजीशा एस. कैप्टेन से विवाह किया जो कि पेशे से एक वकील थे। शादी के बाद भी वे राजनितिक गतिविधियों में सक्रीय रहीं। 1930 में वे बॉम्बे प्रांतीय कांग्रेस कमिटी की अध्यक्ष पद के लिए चुनी जाने वाली पहली महिला बनी।

उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा शुरू किये गये जन असहयोग आंदोलन में भाग लिया और जेल भी गयीं। गाँधी सेवा सेना के गठन के बाद उन्हें इसकी महासचिव बनाया गया। वे साल 1958 में अपनी मृत्यु तक इस पद पर रहीं। उन्होंने हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के लिए भी काम किया।

जब भारत सरकार ने 1954 में पद्म नागरिक पुरस्कारों की शुरुआत की तो पद्म श्री के लिए पेरिन बेन का नाम पुरस्कार विजेताओं की पहली सूची में शामिल किया गया था।

पेरिन बेन लगातार गांधीजी के साथ समाज सुधार के लिए कार्य करती रहीं। उन्होंने अपनी आखिरी सांस तक देश की सेवा की।

॥ ओ३म्॥

गुरु विरजानंद वैदिक ट्रस्ट (पंजी.)

द्वारा संचालित

गुरु विरजानंद वैदिक गुरुकुल, इन्दौर (म.प्र.)

प्रवेश प्रारम्भ

- नि:शुल्क शिक्षा
- नि:शुल्क आवास
- न्यूनतम भोजन शुल्क
- आर्ष पाठचविधि से प्रथमा (6वीं) मध्यमा-शास्त्री-(MA) तक
- गुरुकुलीय अनुशासित दिनचर्या
- आधुनिक शिक्षा
- कम्प्यूटर शिक्षा
- शारीरिक शिक्षा (योगासन, जुड़ो-कराते-नियुद्धम्, लाठी-भाला, आदि)
- संस्कृत संभाषण
- स्पोकन इंग्लिश
- सभी समाज के बालकों के लिए स्वर्णिम अवसर (जाति-बंधन नहीं)
- कक्षा 6-7वीं में प्रवेश प्रारम्भ
- कक्षा-प्रथमा (6वीं) से आचार्य (MA) तक

ऑनलाईन प्रवेश परीक्षा प्रारम्भ

2021-2022 के सत्र की बालकों की प्रवेश परीक्षा दिलाकर प्रवेश दिलायें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार © 9977967777
आचार्य प्रणवीर शास्त्री © 6265583421

गुरुकुल कार्यालय: **आर्य समाज मंदिर**- 219, संचार नगर एक्स., कनाड़िया रोड़, इंदौर (म.प्र.) 452016

© 9977987777 © 9977957777

गणेश शंकर विद्यार्थी

(जन्म– 26 अक्टूबर, 1890, मृत्यु– 25 मार्च, 1931)

एक निडर और निष्पक्ष पत्रकार तो थे ही, इसके साथ ही वे एक समाज–सेवी, स्वतंत्रता सेनानी और कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। भारत के 'स्वाधीनता संग्राम' में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था। अपनी बेबाकी और अलग अंदाज से दूसरों के मुँह पर ताला लगाना एक बेहद मुश्किल काम होता है। कलम की ताकत हमेशा से ही तलवार से अधिक रही है और ऐसे कई पत्रकार हैं, जिन्होंने अपनी कलम से सत्ता तक की राह बदल दी। गणेशशंकर विद्यार्थी भी ऐसे ही पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी कलम की ताकत से अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी थी। गणेशशंकर विद्यार्थी एक ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जो कलम और वाणी के साथ–साथ महात्मा गांधी के अहिंसक समर्थकों और क्रांतिकारियों को समान रूप से देश की आजादी में सक्रिय सहयोग प्रदान करते रहे।

गणेशशंकर विद्यार्थी का जन्म 26 अक्टूबर, 1890 में अपने ननिहाल प्रयाग में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री जयनारायण था। पिता एक स्कूल में अध्यापक के पद पर नियुक्त थे और उर्दू तथा फारसी खूब जानते थे। गणेशशंकर विद्यार्थी की शिक्षा–दीक्षा मुंगावली (ग्वालियर) में हुई थी। पिता के समान ही इन्होंने भी उर्दू–फारसी का अध्ययन किया।

व्यावसायिक शुरुआत– गणेशशंकर विद्यार्थी अपनी आर्थिक कठिनाइयों के कारण एण्ट्रेंस तक ही पढ़ सके। किन्तु उनका स्वतंत्र अध्ययन अनवरत चलता ही रहा। अपनी मेहनत और लगन के बल पर उन्होंने पत्रकारिता के गुणों को खुद में भली प्रकार से सहेज लिया था। शुरु में गणेश शंकर जी को सफलता के अनुसार ही एक नौकरी भी मिली थी, लेकिन उनकी अंग्रेज अधिकारियों से नहीं पटी, जिस कारण उन्होंने वह नौकरी छोड़ दी।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में पत्रकारिता के पुरोधा गणेश शंकर विद्यार्थी का योगदान अजर–अमर है। उन्होंने अपनी क्रांतिकारी लेखनी से न अंग्रेजों की नींद तो उड़ाई ही साथ ही गांधी जी के अहिंसावादी विचारों और क्रांतिकारियों का समान रूप से समर्थन किया। वह चुनिंदा ऐसे पत्रकारों में शुमार किए जाते हैं जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ कलम और धारदार लेखनी को हथियार बनाकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी।

यही वजह थी कि उन्हें कई बार जेल की यातनाएं सहनी पड़ी। लेकिन, अंग्रेजों का यह दबाव उन पर काम ना आया और उन्होंने अपनी क्रांतिकारी लेखनी को जारी रखा। अपने तीखे शब्दों की लेखनी से वह अंग्रेजों की नीति पर अंत तक धावा बोलते रहे।

गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म 26 अक्टूबर 1890 को इलाबाद के पास फतेहपुर के हथगांव में जयनारायण और गोमती देवी के घर हुआ था। विद्यार्थी के पिता जयनारायण मध्यप्रदेश के ग्वालियर में मिडिल स्कूल के टीचर थे। उनके पिता की उर्दू और फारसी में काफी रुचि थी। इसी के चलते गणेश शंकर विद्यार्थी पर भी उनका काफी असर रहा। विद्यार्थी की शुरुआती शिक्षा अपने पिता की देखरेख में ही हुई। यही वजह थी कि उर्दू और फारसी भाषा में उनकी भी काफी रुचि हो गई।

उन्होंने अच्छे अंकों के साथ हाईस्कूल परीक्षा पास की लेकिन, आर्थिक स्थिति खराब होने के चलते वे अपनी आगे की पढ़ाई जारी नहीं रख सके। लेकिन, वह सेल्फ स्टडी करते रहे। पत्रकारिता में रुचि के चलते गणेश शंकर विद्यार्थी कलम की ताकत को भलीभाति समझते थे।

गणेश शंकर विद्यार्थी ने साल 1907 में इलाहाबाद के एक स्कूल कायस्थ पाठशाला में दाखिला लिया। लेकिन, अपनी आर्थिक स्थिति दयनीय होने के चलते वह उसे आगे जारी नहीं रख सके। उसके बाद उन्होंने कानपुर के एक करेंसी ऑफिस में क्लर्क के तौर पर काम करना शुरू किया। लेकिन, ब्रिटिश कर्मचारियों के साथ नहीं बनने के चलते उन्हें वहां से नौकरी छोड़नी पड़ी। उसके बाद वे कानपुर में एक हाईस्कूल में बतौर टीचर जुड़े। लेकिन, पत्रकारिता को लेकर उनकी रुचि कभी कम नहीं हुई।

वह उस वक्त क्रांतिकारी हिन्दी और उर्दू अखबार 'कर्मयोगी' और 'स्वराज्य' में अपने लेख लिखा करते थे। वह अपने लेख को विद्यार्थी के नाम से छपवाते थे। हिन्दी पत्रकारिता का उस वक्त एक बड़ा नाम था पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी। द्विवेदी गणेश शंकर विद्यार्थी के कार्यों से काफी खुश थे।

साल 1911 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने मासिक पत्रिका सरस्वती में सब–एडिटर के तौर पर नौकरी दी। बाद में वे राजनीति और करेंट अफेयर्स में रुचि के चलते हिन्दी राजनीतिक पत्रिका अभ्युदय से जुड़े। साल 1913 में गणेश शंकर विद्यार्थी दोबारा कानपुर वापस लौट आए और 9 नवंबर 1913 को उन्होंने क्रांतिकारी साप्ताहिक 'प्रताप' की शुरुआत की।

कलम को बनाया हथियार– साप्ताहिक मैग्जीन 'प्रताप' की मदद से गणेश शंकर विद्यार्थी ने सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक बदलाव के लिए जोरदार अभियान चलाना शुरू किया। अपने संपादकीय की मदद से वह जल्द ही किसानों और मजदूरों की आवाज बन गए। गणेश शंकर विद्यार्थी ने चंपारण इंडिगो प्लांटेशन के मजदूर, कानपुर के मिल श्रमिकों और बाहर से आकर कुली का काम कर रहे लोगों के पक्ष में वकालत की। विस्फोटक लेख के चलते गणेश शंकर विद्यार्थी पर काफी जुर्माना लगाया गया और पांच बार जेल भी भेजा गया। लेकिन, गणेश शंकर विद्यार्थी पर इस कार्रवाई का कोई असर नहीं पड़ा और वे जमींदारों के अत्याचार व ब्रिटिश शासकों के खिलाफ आवाज उठाते रहे।

स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका– साल 1916 में गणेश शंकर विद्यार्थी लखनऊ में महात्मा गांधी के संपर्क में आए। वह गांधीजी के अहिंसात्मक आंदोलन से काफी प्रभावित थे और वे आजादी के आंदोलन से जुड़ गए। 1917–18 में गृह आंदोलन में उन्होंने आगे आकर नेतृत्व किया। उन्होंने कानपुर में टेक्सटाइल वर्कर्स की पहली हड़ताल का भी नेतृत्व किया।

1920 में उन्होंने दैनिक 'प्रताप' के दैनिक संस्करण की शुरुआत की। एक संपादकीय में उन्होंने रायबरेली के खेतिहर मजदूर की आवाज का समर्थन किया। जिसके बाद उन्हें दो साल की कैद की सजा दी गई। दो साल बाद साल 1922 में जेल से रिहा होने के बाद गणेश शंकर विद्यार्थी को प्रोविंसियल पॉलिटिकल कॉन्फ्रेंस का प्रेसिडेंट बनाया गया। अंग्रेजों के खिलाफ भाषण देने के चलते फिर से दो साल के लिए जेल भेज दिया गया। उसके बावजूद उनके जज्बे को अंग्रेजी हुकूमत नहीं कम कर पायी।

साम्प्रदायिक आग में गणेश शंकर विद्यार्थी की मौत– मार्च 1931 में कानपुर के चौबेगोला में साम्प्रदायिक हिंसा भड़क उठी। गणेश शंकर विद्यार्थी साम्प्रदायिक सौहार्द और शांति को बनाने का काफी प्रयास कर रहे थे। लेकिन, कुछ काम नहीं आया। जिसके बाद हजारों निर्दोष लोगों की जान बचाने के लिए वह दंगे की आग में कूद पड़े। 25 मार्च 1931 को 40 वर्ष की आयु में जिस वक्त वे दंगा प्रभावित इलाके का दौरा कर रहे थे, भीड़ की तरफ से उन पर हुए अचानक हमले में उनकी मौत हो गई।

यज्ञ-ध्वनि-प्रदूषण निवारक

हवन प्रक्रिया के साथ–साथ मन्त्रों का उच्चारण क्यों किया जाता है इसका महर्षि ने "सत्यार्थ प्रकाश'' में उत्तर देते हुए लिखा है "मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जायें और मन्त्रों की आवृत्ति होने से कण्ठस्थ रहें, वेद–पुस्तकों का पठन–पाठन और रक्षा भी होवे। आप किसी प्रीतिभोज का निमंत्रण दें और उसका मधुर शब्दों से स्वागत करने के स्थान पर व्यंगपूर्ण कटु शब्दों से उसकी अवमानना करें तो उसके लिए सारे स्वादिष्ट व्यंजन व्यर्थ हो जाते हैं।

"रहिमन रहिला ही भली, जो पर से चित लाये।
परसत मन मैला करे वह मैदा जरि जाय।।''

इस कवि कथ्य के अनुसार रुखा सूखा भोजन भी प्रेमपूर्ण मधुर वार्तायुक्त सत्कार की भावना से परोसा जाता है, तो वह मुस्कान के साथ अतिथि द्वारा ग्रहण तो किया ही जाता है, उसका गुणकारी पोषण भी उसे प्राप्त होता है। अग्निहोत्र में भी देवताओं का प्रीतिभोज के समान ही आह्वान किया जाता है।

भूमि–प्रदूषण, जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण तो कतिपय भौतिक क्रियाओं तथा हवन की गैसीय प्रतिक्रियाओं से दूर हो जाते हैं। किन्तु ध्वनि–प्रदूषण सर्वाधिक सूक्ष्म प्रभावकारी होता है। विश्व में कहीं भी एक शब्द बोला जाता है तो वह सूक्ष्म विद्युत। चुम्बकीय तरंगों में रूपान्तरित होकर सारे आकाश में फैल जाता है, तभी तो दूरदर्शन या आकशवाणी से वही शब्द सारे विश्व में एक साथ एक ही समय में प्रसरित हो जाते हैं। पृथ्वी के शोर, चीख–पुकार, नारेबाजी, चीत्कार, ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से ध्वनि प्रदूषण आकाश में भर जाता है, इस आकाश.प्रदूषण का परिशमन किन शब्दों में संभव है? वेदमाता की वाणी से ही। ऐसा क्यों? देखिये कोई किशोर पुत्र लिखने–पढ़ने या अन्य आवश्यक कार्य करने में लापरवाही से भूल करता है और हितैषियों के परामर्श के बाद भी भूल को भयंकर भूल में दोहराता चला जाता है, तो फिर पिता उसे कठोर शब्दों से प्रताड़ित करता है, किन्तु यदि वह कोई सुधार लाने के स्थान पर घर छोड़ने व मर मिटने तक के लिए उद्यत हो जाता है, वहीं पर जब उसकी माता अपने प्रेम व सहानुभूति भरे मधुर शब्दों से दुलारते हुए समझाती है तो पुत्र सावधान होकर सतर्क हो जाता है आप कह सकते हैं कि यह कार्य तो वेदवाणी तबभी करेगी, जब हवन न किया जा रहा हो। हाँ बात सही है। किन्तु हवन करते समय वेदमन्त्रों के उच्चारण के बहुत लाभ हैं। यथा, जब हम यज्ञ जैसा शुभ कर्म कर रहे हैं तो उसमें प्रभुवाणी उच्चारण का एक शुभ कर्म और जोड़ दें, फिर वेद मन्त्रों से यज्ञ कार्य की प्रेरणा प्राप्त कर लें, क्योंकि उनमें इस का वर्णन है, उत्तम आदर्श जीवन जीने की शिक्षा मन्त्रार्थ से प्राप्त कर लें, परमेश्वर की स्तुति, गुण–गान से जीवन में आस्तिकता का प्रादुर्भाव एवं अभिमान का अभाव कर लें और सर्वाधिक यह कि यज्ञ अग्नि की ज्वालाओं के द्वारा सूक्ष्म किये गए घृत सामग्री से उत्पादित वायु के सार्थक मन्त्रों एवं उनकी भावनाओं को सर्वत्र व्याप्त कर दें, जिससे ध्वनि प्रदूषण नभ मण्डल शुद्ध होकर कल्याणकारी शब्द गुण से भर जाये।

वर्तमान में शब्द ध्वनि का उपयोग आधुनिक चिकित्सा में नवीनतम पद्धति के रूप में किया जाने लगा है, जिसे अल्ट्रासोनिक वेव ट्रीटमेन्ट या शब्द ध्वनि तरंग उपचार कहते है। अल्ट्रासाऊन्ड आदि यन्त्रों द्वारा न केवल शरीर के आन्तरिक अंगों की दशा का ज्ञान कर लिया जाता है अपितु प्रभावित अंगो पर मन्त्र द्वारा शब्द तरंगों के स्पर्श से उसकी पीड़ा आदि को दूर कर दिया जाता है।

Ultrasonic या Supersonic wave treatment में यन्त्र के माध्यम से Sound waves को केंद्रित किया जाता है। इन Sound waves या शब्द लहरियों में इतना बल् होता है कि शब्द – लहरियों को केन्द्रित करने वाले इन यन्त्रों से जब पीड़ा वाले स्थानों को कई दिन तक 5–7 मिनट के लिए छुआ जाता है तब ये दर्द चले जाते है। किसी भी बड़ें

चिकित्सालय में जाकर इस बात का पता तथा अनुभव प्राप्त किया जा सकता है। वेद–मन्त्रों का उच्चारण क्या है? यह स्वर लहरियों (Sound waves) का ही तो वायु मंडल में प्रसारण है। अगर यन्त्र द्वारा Ultrasonic waves से रोग दूर किया जा सकता है, तो वेद–मन्त्रों से एक खास प्रकार के उच्चारण से ऐसी लहरें उत्पन्न कर देना जिनसे रोग का निवारण हो, कोई आश्चर्य की बात नहीं। कोई समय रहा होग, जब वेदपाठी इस विधि को जानते थे, परन्तु वेद–मन्त्रों द्वारा वायु–मंडल को तथा मानव को प्रभावित कर देना आजकल के Ultrasonic waves द्वारा उपचार के ही समान हैं।

यज्ञ करते समय हम जो अनेक मन्त्रों का पाठ करते हैं उन मन्त्रों की ध्वनि तरंगें हमारे शरीर, मस्तिष्क, मन व आत्मा पर विशेष प्रभाव डालती हैं साथ–साथ वातावरण में जाकर समस्त वातावरण की दूषित ध्वनियों को समाप्त करती हैं तथा मधुरता, सरसता व ओजस्विता का प्रसार करती हैं क्योंकि मन्त्र एक प्रतिरोधात्मक शक्ति होती है। एक मन्त्र जाप एक प्रकार की चिकित्सा पद्धति है। मन्त्र साधना के सहारे प्रतिकूल प्रकम्पनों से बचा जा सकता है। जिस तरह रसायनशास्त्री यह जानता है कि किन–किन रसायनों के मेल से क्या नवीन व विशिष्ट

रसायन बनता है वैसे ही ध्वनि वैज्ञानिक को यह भास होता है किन–किन शब्दों की संयोजना से किस–किस प्रकार की तरंगे होती हैं, वे पर्यावरण में व्याप्त परमाणुओं को कैसे कम्पित करती हैं और उसकी परिणति किस प्रकार होगी। आज से लाखों वर्ष पूर्व वैदिक ऋषियों ने भी इसी विज्ञान के आधार पर मन्त्रों की संयोजना की थी जिसे आधुनिक काल का वैज्ञानिक प्रमाणिक मानता है। मन्त्र ध्वनि के विशिष्ट समूह होते हैं। लगातार वही मन्त्र उच्चारण करते रहने से वातावरण में उन ध्वनि तरंगों का विशेष प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। यही मन्त्रों का परिणाम है।

जब शब्दों का उच्चारण होता है तब उनसे आकाश में कम्पन्न उत्पन्न होता है। कम्पन समस्त लोक परिक्रमा कर लेती है और अनुकूल तरंगों को पाकर उससे मिल जाती है उसके संयुक्त प्रभाव से साधक की इच्छा को मूर्तरूप मिल जाता है। यज्ञ में वेद मन्त्रों के उच्चारण का प्रयोजन भी तो उनके विशिष्ट छन्द स्वर के नियत उच्चारण से ऐसी शब्द लहरें उत्पन्न कर देना है जिनसे न केवल आधि–व्याधियों का निवारण ही हो, प्रत्युत सम्पूर्ण आकाश ऐसे विषाणुओं से मुक्त होकर स्वच्छ व हितकारी बना रहे।

ध्वनि तरंगों से मानसिक शान्ति भी उसी प्रकार से उद्दीप्त होती है जैसे वायु लहरियों के समीप में आने से अग्नि प्रज्जवलित होती है। इस प्रकार मनुष्य यज्ञ में प्रयुक्त मन्त्रों के प्रभाव से अनेक मानसिक रोगों से रहित हो जाता है।

साभार– यज्ञ–थैरेपी
लेखक– संदीप आर्य

Subscribe
वैदिक राष्ट्र
VAIDIK RASHTRA
वेदों को जानने लिए
वैदिक राष्ट्र
यू ट्यूब चैनल सब्सक्राईब करें
9977 98 7777, 9977 95 7777

वैदिक भजन
॥ ओ३म् ॥

प्रभो ! तेरी शरण तज कर
शरण पाने कहाँ जायें
दिये दुःख दर्द दुनिया ने
तो दीवाने कहाँ जायें...
रचनाकार- पथिक जी
स्वर- डॉ. अर्चना प्रिय आर्य व वन्दना प्रिय आर्य
वैदिक राष्ट्र YouTube Channel करें
YouTube वैदिक राष्ट्र Vaidik Rashtra
वैदिक राष्ट्र Facebook Page Like करें

वैदिक राष्ट्र
VAIDIK RASHTRA
LIKE & SHARE
वेदों को जानने लिए
वैदिक राष्ट्र
यू ट्यूब चैनल सब्सक्राईब करें
9977 98 7777, 9977 95 7777

यजुर्वेद की महिमा

–आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा

''यजुः यजतेः'' ''अनियताक्षरावसानो यजुः'' ''गद्यात्मको यजुः'' ''वायुरेव यजुः'' (यत्जूः यत् वायु, जूः गति) तेन यत् गतिशीलं तत् यजुः । 'अध्वर' शब्दो यस्य पर्यायः । न ध्वरः इति "अध्वरः'' इति यज्ञ नाम। आध्वर्यवकर्मणे उपादेये यजुर्वेद यजुषां संग्रहो वर्तते। यज्ञ अर्थात् कर्मकाण्ड विषयक मंत्रो की प्रधानता होने से इसका नाम ''यजुर्वेद' पड़ा है। यजुर्वेद का ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के आदि में ''वायु' नामक ऋषि को दिया था। 'अध्वर्यु' यजुर्वेद की ऋचाओं का पाठ यज्ञ में करता है। महर्षि वेदव्यास ने ''वैशम्पायन'' को इस यजुर्वेद का ज्ञान दिया।

पौराणिक विचारानुसार यजुर्वेद के दो भेद–शुक्ल यजुर्वेद आदित्य सम्प्रदाय का प्रतिनिधि है और कृष्णयजुर्वेद ब्रह्म सम्प्रदाय का प्रतिनिधि है। आदित्य सम्प्रदाय की प्रतिनिधि माध्यन्दिनीय संहिता है और ब्रह्मसम्प्रदाय की प्रतिनिधि तैत्तिरीय संहिता हैं। माध्यन्दिन संहिता में 40 अध्याय और 1975 मंत्र हैं। तैत्तिरीय संहिता में 44 प्रपाठक, 651 अनुवाक, 2198 मंत्र हैं। माध्यन्दिन संहिता में दर्शपौर्णमास, अग्निहोत्र, सोमयाग, यूपनिर्माण, वाजपेयराजसूय यज्ञ, राजसूय यज्ञ, वसोधारा, सौत्रामणी, अश्वमेघ, प्रायश्चित यज्ञ, शिवसंकल्प मंत्र आदि प्रसिद्ध हैं।

यजुर्वेद में 31 वाँ अध्याय पुरुष सूक्त और 40 वाँ अध्याय ईशोपनिषद् के रूप में प्रसिद्ध हैं यजुर्वेद का प्रारंभ ''इषे त्वोर्जे त्वा....... पशून पाहि।' इस मंत्र से होता है। भक्त भगवान् से प्रार्थना कर रहा है–हे प्रभो! मैं सत्प्रेरणा और उत्साह (शक्ति) प्राप्त करने के लिए शरण में आया हूँ। मुझे उत्तम अन्न (भोजन आहार) और बल प्राप्ति का वरदान कीजिए। श्रेष्ठ कर्म करो, प्रतिदिन आगे बढ़ो, अहिंसक बनो, ऐश्वर्यशाली बनो, उत्तम प्रजा वाले बनो, निरोगी बनो, गौ–रक्षक बनो, इन्द्रियों के स्वामी बनो, काम–क्रोधादि पशुवृत्तियों से रक्षा करो।

यजुर्वेद का अंतिम मंत्र है कि ''हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं! योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् । ओं खं ब्रहा।' स्वर्ण के देदीप्यमान पात्र से सत्य का स्वरूप ढ़का है। जो वह सूर्यमण्डल में अधिष्ठाता परम पुरुष अवस्थित है। वह मेरे प्राणों में भी है। वह परम ब्रह्म आकाशवत् सर्वत्र व्यापक है।

अतः संपूर्ण यजुर्वेद कर्मकाण्ड संप्रेरक मंत्रों के साथ–साथ यज्ञपति यज्ञरूप प्रभु की महान प्रार्थनाओं और अभीष्ट वरदानों से परिपूर्ण है।

10, आदित्य नगर, सी.पी. कॉलोनी
मेन रोड, मोरार, ग्वालियर (म.प्र.) 474003

॥ ओ३म् ॥
न आयु बंधन... न शिक्षा बंधन... न जाति बंधन
सर्वजातीय परिणय स्मारिका
अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़, दिव्यांग आदि वैवाहिक रिश्तों के लिये
सर्वजातीय परिणय स्मारिका मंगाये
9977987777, 9977957777
आर्य समाज मंदिर- संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016

सर्वजातीय परिणय स्मारिका मंगाएँ
अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़ आदि
कार्यालय– आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर
मो. 9977987777, 9977967777

You Tube
वैदिक राष्ट्र
VAIDIK RASHTRA
आर्य समाज के वार्षिकोत्सव एवं आर्य संस्थाओं के वैदिक कार्यक्रम निःशुल्क प्रचारित–प्रसारित करने के लिए संपर्क करें।
9977 98 7777, 9977 95 7777

सुखी जीवन के सूत्र

श्रुति भगवती का उपदेश है कि –

स्वेन क्रतुना सम्वदेत।

हे मानव ! तू कर्म से बोल । तेरा जीवन बोले ।

सन्त कबीर के शब्दों मे–

कथनी मीठी खाँड सी करनी विष की लोय ।
कथनी तज करनी करे विष से अमृत होय ।।

जिनकी कथनी और करनी एक होती है वे ही महात्मा पुरुष सत्पुरुष कहलाते हैं परन्तु **मनस्यन्यद्वचस्यन्यदकर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।** मन में कुछ और, वाणी में कुछ और कर्म में कुछ और– ऐसे जन दुरात्मा कहाते हैं। मन से सबका भला सोचिये,वाणी से हितकारी और मनोहर शब्द बोलिये। कर्म ऐसे कीजिये जो सर्वहित में हों। आपका भाव हो–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तुमा कश्चिद्ःखभाग्भवेत्।।

सभी सुखी एवं नीरोग हों, कल्याण ही कल्याण देखें तथा कोई भी दुखी न हो।

सर्व परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम् ।

अपना हाथ जगन्नाथ। जिसकी इन्द्रियाँ अच्छी हैं UNDER CONTROL हैं वह व्यक्ति सुखी है और जिसकी OVER CONTROL हैं वह व्यक्ति दुखी है। यदि आप अग्नि को Master कर लें तो अग्निदेव आपके लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं परन्तु यदि अग्नि आपको Master कर ले तो **सर्वं वै पूर्ण स्वाहा** हो जाएगा। इसी प्रकार अन्य देवताओं के सम्बन्ध में भी समझें। If you want to be happy give | happiness to others. यदि आप प्रसन्न रहना चाहते हैं तो प्रसन्नता बाँटिये।

इलाहाबाद में वैद्यराज पं. ओंकारनाथ अवस्थी के पावन सांनिध्य में रहने का सुअवसर मिला। बहुत बहुत अच्छा लगा। उन्होंने नीरोग जीवन का प्रथम सूत्र बताया उषर्बुध होना। Early to bed & early to rise makes a man healthy wealthy & wise. महर्षि मनु का भी कथन है– **ब्राह्म मुहूर्ते बुध्येत।** अमृतवेला में उठो। सूर्यनारायण का दर्शन करो। यदि सूर्यनारायण ने आपका दर्शन कर लिया यानि कि आप सूर्योदय के पश्चात् भी चारपाई से चिपके रहे तो सूर्यकिरणें आपके तेज और समृद्धि का हरण कर लेंगी। आप हतवर्चा हो जाएँगे और हर जगह असफलता का मुख देखना पड़ेगा। यदि आपने सूर्यदर्शन किया तो सूर्यकिरणें आपको अद्भुत तेज, प्रकाश और समृद्धि से भर देंगी। आप स्वस्थ, धनी और प्राज्ञ होंगे।

दूसरी बात कही– अभिवादनशील होना। महर्षि मनु के शब्दों में–

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम् ।।

जो बालक प्रातःकाल उठकर अपने माता पिता एवं गुरुजनों को नमन करता है और नित्यप्रति उनकी सेवा करता है उसकी चार चीजें बढ़ती हैं– आयु, विद्या, यश और बल। गोस्वामी तुलसीदासजी ने गाया है–

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा।
मात पिता गुरु नावहिं माथा ।।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र प्रातःकाल उठकर भाइयों सहित माता–पिता और गुरुजनों को मस्तक झुकाकर प्रणाम करते थे और उनके आदेशों का पालन करने के लिये सदैव तत्पर रहते थे।

तीसरा सूत्र– खूब भूख लगने पर ही भोजन करना। बिना भूख के नहीं खाना। उन्होंने एक घटना सुनाई। एक रोगी को लंघन (उपवास) कराया गया। तीन दिन बाद रोगी ने वैद्यजी से कहा। "मैं भोजन करना चाहता हूँ। क्या आप मुझे कुछ खाने को देंगे'? वैद्यराज बोले, अवश्य ! तुम्हें मूंग की दाल का पानी और सूखी रोटी दी जा सकती है। रोगी ने नाक–मुँह चढ़ाया और बोला "वह तो मुझे स्वादिष्ट नहीं लगेगा"। वैद्यजी ने रोगी को तीन दिन और लंघन कराया। तत्पश्चात् रोगी ने वही मूंग का दाल का पानी और सूखी रोटी बड़े स्वाद से खाई।

अन्तिम और सर्वाधिक महात्वपूर्ण सूत्र सबका भला सोचना और सबके भले के लिये यथाशक्ति कर्म करना

परहित बस जिन्ह के मन माहिं।
तिन्ह कँह जग दुरलभ कछु नाहिं ।।

आप सबका अक्षय कल्याण होवे। आप वेदोपदेश को जीवन का अंग बना सकें। इति ।

वैदिक राष्ट्र मासिक पत्रिका की विज्ञापन दरें

(1)	अंतिम कलर पेज	–	रु. 20,000/–
(2)	2–3 कलर पेज	–	रु. 15,000/–
(3)	अंदर कलर पेज	–	रु. 10,000/–
(4)	ब्लेक एण्ड व्हाईट फुल पेज	–	रु. 5,000/–
(5)	ब्लेक एण्ड व्हाईट हॉफ 1/2 पेज	–	रु. 3,000/–
(6)	ब्लेक एण्ड व्हाईट क्वार्टर 1/4 पेज	–	रु. 1,500/–
(7)	ब्लेक एण्ड व्हाईट क्वार्टर 1/8 पेज	–	रु. 500/–

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य - केवल मात्र 3,100/– रुपए में प्राप्त करें

(1) ऋग्वेद 10,522 मंत्र, (2) यजुर्वेद 1975 मंत्र,
(3) सामवेद 1875 मंत्र (4) अथर्ववेद 5677 मंत्र

कुल 20,049 मंत्रों का संस्कृत हिन्दी पदार्थ - भावार्थ सहित चारों वेदों को प्राप्त करें।

वैदिक लेख

सत्यार्थ प्रकाश
ग्रंथ अविद्या दूर करने के लिए लिखा गया है...

लेखक- श्री मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वैदिक राष्ट्र
VAIDIK RASHTRA

वेदों को जानने लिए वैदिक राष्ट्र यू ट्यूब चैनल सब्सक्राईब करें
9977 98 7777, 9977 95 7777

वैदिक राष्ट्र
VAIDIK RASHTRA

वेदों को जानने लिए वैदिक राष्ट्र यू ट्यूब चैनल सब्सक्राईब करें
9977 98 7777, 9977 95 7777

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.)

के तत्वावधान में

हिन्दू सर्वजातीय परिचय सम्मेलन

अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, दिव्यांग, प्रौढ़ (अधिक आयु)

दिनांक - 25 दिसम्बर 2021

रिश्ते सर्वजातीय रिश्ते

www.aryavivah.com

सखा सप्तपदीभव।

-संयोजक-

डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

सर्व ब्राह्मण, सर्व राजपूत, सर्व वैश्य, दिगम्बर जैन, कुर्मी, श्वेताम्बर जैन, सिख, बौद्ध, गुजराती, मराठी, पंजाबी, सिंधी, महाराष्ट्रीयन, मारवाडी, कायस्थ, जाट, लौधी, राजपूत, यादव, सोनी, वर्मा, सेन, वाल्मिकी, जायसवाल, कुशवाह, साहू, तेली, पाटीदार, खाती, कलौता, कुमावत, मीणा, सैनी, नामदेव, प्रजापति, रजक, माली, मौर्य, गुर्जर, कोष्ठी, राठौर आदि समस्त हिंदू समाज के सामान्य वर्ग, पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति वर्ग, अनुसूचित जनजाति वर्ग आदि।

अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, दिव्यांग, प्रौढ़ (अधिक आयु) प्रत्याशी

वैवाहिक सम्बंध हेतु बॉयोडाटा-फोटो

संपूर्ण कलर में 'सर्वजातीय परिणय स्मारिका' में प्रकाशन करने के लिये

अपना विवरण बायोडाटा-फोटो आदि भेंज कर सूचित करें।

वॉट्सअप 9977957777, वॉट्सअप 9977987777 अथवा

आर्य विवाह एप्प Aryavivah App Download कर करें अथवा

www.aryavivah.com पर जानकारी भेजे अथवा E-mail: aryavivah18@gmail.com

शुल्क जमा करने के लिये

Bank Name - HDFC Bank A/c No. - 50200034013635 IFSC Code - HDFC0001772	PhonePe G Pay 9977967777 Paytm 9977987777

आयोजक- आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.)

कार्यालय: आर्य समाज संचार नगर- 219, संचार नगर एक्स. कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016

9977987777, 9977967777,9202213410

''सर्वजातीय परिणय-स्मारिका'' में बायोडाटा-फोटो प्रकाशनार्थ हेतु।

Aryavivah App Download करें

GET IT ON Google Play

गूगल प्ले स्टोर पर जाकर aryavivah App Download करें

नवसस्येष्टि (शारदीय), दीपावली पर्व पद्धति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित लेखक श्री पं भवानी प्रसाद जी की आर्य पर्व पद्धति के अनुसार पद्धति।

गृहकृत्य– यतः दिवाली का पर्व वर्ष भर में घरों की लिपाई–पुताई आदि संस्कार के लिए विशेषतः उद्धत है। इसलिए स्वसुभीते के अनुसार दिवाली के पूर्व दिन के सायंकाल तक प्रचलित प्रथानुसार यह सब कार्य समाप्त हो जाना चाहिए। कार्तिक अमावस्या के दिन प्रातःकाल सामान्य पर्व पद्धति में प्रदर्शित प्रकारानुसार यज्ञशाला व आवास गृह के तल का गोमय से पुनः लेपन करके स्वदेशीय नवीन शुद्ध वस्त्र परिधान पूर्वक सामान्य होम करके निम्नलिखित मन्त्रों से स्थालीपाक से ३८ विशेष आहुतियां दी जाएँ। स्थालीपाक नवागत श्रावणी शस्य अन्न से बनाया गया पायस (खीर) हो। हवन के अन्य साकल्य में लाजा (नवीन धनो की खील) विशेषतः मिलायी जाये।

नवसस्येष्टि (शारदीय), दीपावली

१. ओ३म् परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते श्रृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा ।।

२. ओ३म् मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः स्वाहा ।।

३. ओ३म् इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य ।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाःस्वाहा ।।

४. ओ३म् इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थ मेतम् ।
शतं जीवन्तु शरदः पुरुचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन स्वाहा ।।

५. ओ३म् यथा हान्यनुपूर्वं भवन्ति यथा ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु ।
यथा नः पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूँषि कल्पयैषाम् स्वाहा ।।

६. ओ३म् आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृथाः ।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा स्वाहा ।।

७. ओ३म् ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।
इन्द्रो ह ब्रम्हचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् स्वाहा ।।

८. ओ३म् शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेऽभिमातिषाहे ।
शतं यो नः शरदो अजीयादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा स्वाहा ।।

९. ओ३म् ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति ।
तेषां यो आ ज्यानिमजीतिमा वहास्तस्मै नो देवाः परिदत्तेहसर्वं स्वाहा ।।

१०. ओ३म् ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु ।
तेषामृतूनां शतशारदानां निवात ऐषामभये स्याम स्वाहा ।।

११. इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः ।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानां ज्योग् जीता अहताः स्याम स्वाहा ।।

१२. ओ३म् पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः ।
तमिहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः स्वाहा ।।

१३. ओ३म् यन्मे किञ्चिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन् ।
तन्मे सर्वं समृध्यतां जीवतः शरदः शतम् स्वाहा ।।

१४. ओ३म् सम्पत्तिभूतिर्भूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठ्यं श्रैष्ठ्यं श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा ।। इदमिन्द्राय इदन्न मम ।

१५. ओ३म् यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम् ।

इन्द्रपत्नीमुपव्हये सीतां सा में त्वनपायिनी भूयात्कर्मणि कर्मणि स्वाहा ।। इदमिन्द्रपत्न्यै इदन्न मम ।
१६. ओ३म् अश्वावती गोमती सूनृतावती बिभर्ति या प्राणभृताम् अतन्द्रिता ।
खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपव्हये ध्रुवां सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा ।। इदं सीतायै इदन्न मम ।
१७. ओ३म् सीतायै स्वाहा ।।
१८. ओ३म् प्रजायै स्वाहा ।।
१६. ओ३म् शमायै स्वाहा ।।
२०. ओ३म् भूत्यै स्वाहा ।।
२१. ओ३म् व्रीहयश्च में यवाश्च में माषाश्च में तिलाश्च में मुद्गाश्च में खल्वाश्च में प्रियङ्गवश्च मेणवश्च में श्यामाकाश्च में नीवाराश्च में गोधूमाश्च में मसूराश्च में यज्ञेन कल्पांताम् स्वाहा ।।
२२. ओ३म् वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः ।
वाजो नो विश्वैर्देवैर्धतसातविहावतु स्वाहा ।।
२३. ओ३म् वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवां ऋतुभिः कल्पयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयं स्वाहा ।।
२४. ओ३म् वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयं स्वाहा ।।
२५. ओ३म् सीरा युंजन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक् धीरा देवेषु सुम्नयौ स्वाहा ।।
२६. ओ३म् युनक्त सीरा वियुगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम् ।
विराजः स्श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमायवन् स्वाहा ।।
२७. ओ३म् लाङ्गलं पवीरवत् सुशीमं सोमसत्सरु ।
उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीवरीं च प्रफर्व्यम् स्वाहा ।।
२८. ओ३म् इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् स्वाहा ।।
२६. ओ३म् शुनं सुफाला वि तुदन्तु भूमिं शुनं किनाशा अनु यन्तु वाहान् ।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै स्वाहा ।।
३०. ओ३म् शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लांगलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय स्वाहा ।।
३१. ओ३म् शुनासीरेह स्म मे जुषेथाम् ।
यद्दीवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुपसिञ्चतम् स्वाहा ।।
३२. ओ३म् सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव ।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः स्वाहा ।।
३३. ओ३म् घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वैर्देवैरनुमता मरुदिभः ।
सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वति घृतवत्पिन्वमाना स्वाहा ।।
३४. ओ३म् इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा ।। इदमिन्द्राग्निभ्यां इदन्न मम ।
३५. ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यःस्वाहा ।। इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः इदन्न मम ।
३६. ओ३म् द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ।। इदं द्यावापृथिवीभ्याम् इदन्न मम ।
३७. ओ३म् स्विष्टमग्ने अभि तत्पृणीहि विश्वांश्च देवः पृतना अभिष्यक् ।
सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरं न आयुः स्वाहा ।।
३८. ओ३म् यदस्य कर्मणौत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् ।
अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहूतं करोतु में अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां

समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धय स्वाहा ।। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम ।

पूर्णहुती के पश्चात खीलों और मिष्ठान के (बताशे आदि) हुतशेष को यज्ञ मंडप में उपस्थित जनो में वितरण करके भक्षण किया जाये।

अपरान्ह में प्रचलित प्रथानुसार इष्ट मित्रों को मिष्ठान के उपायन (भेंट) दिया जाये। सायं काल के समय आवास गृहों को सुचारु रूपेण सजाकर स्वसामर्थ्यानुसार दीपमाला की जाये।

सामाजिक कृत्य अपरान्ह व रात्रि में स्वसुभीते के अनुसार समाज मंदिर आदि में एकत्र होकर आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द की स्मृति में सभा की जाये और उस में ऋषि के गुणानुवाद पर भाषण, लेख और कविताओं का पथ किया जाये तथा इसी विषय पर मधुर संगीत हो। इस अवसर पर आर्य समाज के लिये अधिक से अधिक प्रत्येक पुरुष दान देवे।

✆ 9977967777 ।। ओ३म् ।। ✆ 9977987777

नम्र निवेदन गुरुकुल को सहयोग अवश्य कीजिए

गुरु विरजानंद वैदिक ट्रस्ट (पंजी.)

द्वारा संचालित

गुरु विरजानंद वैदिक गुरुकुल, इंदौर (म.प्र.)

वैदिक संस्कृति का संवाहक- गुरु विरजानंद वैदिक गुरुकुल

सहयोग राशि के लिये

Bank Name	-	HDFC
Bank	-	Guru Virajanand Vaidik Trust
A/C	-	50200034013635,
IFSC	-	HDFC0001772

PhonePe G Pay 9977967777

Paytm 9977987777

सभी से निवेदन है कि तन-मन धन से सहयोग करें। धन्यवाद !

क्या आपने अभी तक गुरुकुल को सहयोग किया है ?

आपने सहयोग नहीं दिया है तो आप हमारा सहयोग अवश्य कीजिए।
आपका छोटा सा भी सहयोग हमारे लिये महत्त्वपूर्ण है ॥

आप गुरु विरजानन्द वैदिक गुरुकुल, इंदौर को निम्नलिखित प्रकार से सहयोग कर सकते है...

- गुरुकुल के **मासिक दानदाता** के रुप में न्यूनतम प्रत्येक माह 100/- रुपये देकर।
- गुरुकुल के **वार्षिक होता दानदाता** के रुप में न्यूनतम वार्षिक 1100/- रुपये देकर।
- गुरुकुल के संरक्षक **सदस्य के रुप में** न्यूनतम वार्षिक 5000/- रुपये देकर।
- गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी के **धर्ममाता-पिता के रुप** में न्यूनतम 11000/- रुपये वार्षिक दान देकर।
- **पूर्णिमा एवं अमावस्या** पर्व पर एक **ब्रह्मचारियों** के लिये अन्नदान (सीधा)।
- अपने **माता-पिता, दादा-दादी** आदि की स्मृति में गुरुकुल में यज्ञ कराकर एवं भोजन कराकर।
- अपने एवं अपने परिवार के **जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ** आदि के उपलक्ष्य में गुरुकुल परिसर में वैदिक विधि से यज्ञ द्वारा जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ आदि मनाकर।
- एक समय के यज्ञ के **यज्ञमान** का व्यय 500/- रुपये देकर।
- **दाल, चावल, आटा, तेल, घी, दूध, फल आदि का दान कर।**

वैदिक गुरुकुल परम्परा में वेद-दर्शन-उपनिषद्-व्याकरण-वैदिक साहित्य एवं आर्ष संस्कृत साहित्य के पाठ्यक्रम में प्रथमा (6वीं, 7वीं, 8वीं) मध्यमा (9वीं, 10वीं, 11वीं, 12वीं) शास्त्री (बी.ए) आचार्य (एम.ए) का अध्ययन कराया जाता है। ब्रह्मचारियों को वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये शिक्षा दी जाती है, सभी ब्रह्मचारियों की निःशुल्क भोजन, शिक्षा, आवास आदि व्यवस्था है।
आपका वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से सहयोग अपेक्षित है।

संचालक
आचार्य डॉ. भानुप्रताप वेदालंकार

कार्यालय- **गुरु विरजानंद वैदिक ट्रस्ट**, आर्य समाज- 219, संचार नगर एक्सटैंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016
Web.: www.guruvirjanandgurukul.com, E-mail: guruvirjanandgurukul@gmail.com ✆ 9977967777, 9977987777

शारदीय नवसस्येष्टि दीपावली

शारदीय शुभ शस्य सुहाई, अदभुत सुंदरता सरसाई ।
मुदग, मास, तिल, शालि, चुलाई, जन मन भरते मोद बधाई ।।
लिपे पुते घर है छवि छाये, दीपावली की ज्योति जगाये ।
नवसस्येष्टि सज्जन करते हैं शुद्ध गंधक घर घर भरते हैं ।।
थल–थल में राम रही रामा है, सदन सदन सुसमृद्धि है ।

–सिद्धगोपाल कविरत्न

सुधासार दया कर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।।
'शंकर' दिया बुझाय दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल–वदन में बिला गया।।

–कविवर नाथूराम 'शंकर'

आज शरऋतु की समाप्ति में केवल पन्द्रह दिन शेष हैं। पन्द्रह दिन पीछे सर्वत्र हेमन्तऋतु का राज्य होगा और शीत का शासन सबको स्वीकार करना होगा। वर्षा के बीतने और शीत लगने पर जनता को कुछ विशेष समारम्भ (तैयारियाँ) करने पड़ते हैं। वर्षा ऋतु में वृष्टिबाहुल्य से वायुमण्डल तथा घरबार विकृत, मलिन और दुर्गन्धित हो जाते हैं। बरसात के अन्त में उनकी संशुद्धि और स्वच्छता की आवश्यकता होती है। वायुमण्डल का संशोधन हवन–यज्ञ से होता है और घर बार की स्वच्छता लिपाई–पुताई से की जाती है। इसी समय भावी शीत–निवारण के लिए गरम वस्त्रों का प्रबन्ध करना होता है। इसी समय सावनी की फसल का आगमन होता हैं। किसान के आनन्द की सीमा नहीं है। उसका घर अन्न–धान, माष, मूंग, बाजरा, तिल और कपास से भरपूर होने को है। इस अवसर पर श्रौत और स्मार्तसूत्रों में गोभिलगृह्यसूत्र, तृतीय प्रपाठक, सप्तमखण्ड, ७–२४ सूत्र, पारस्करगृह्यसूत्र द्वितीय काण्ड, १७ वीं कण्डिका, १–१८ सूत्र, आपस्तम्बीय गृह्यसूत्र १६ खण्ड, मानवगृह्यसूत्र तृतीय खण्ड तथा मनुस्मृति के–

सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या तथवन्ते द्विजोऽध्वरैः।

–मनु. ४।२६

इस पद्य में नवसस्येष्टि या नवान्नेष्टि (नव नवीनसस्य फसल वा खेतीइष्टि यज्ञ, अर्थात नवीन फसल के अन्न का यज्ञ) करने का विधान है। इन सब कार्यों के लिए पर्व कार्तिक बदि अमावास्या तिथि प्राचीन काल से नियत चली आती है, इसको दीपावली भी कहते हैं। वैसे तो प्रत्येक अमावास्या को दर्शेष्टि यज्ञ कर्मकाण्ड ग्रन्थों में विहित हैं, किन्तु कार्तिकी अमावास्या को दर्शष्टि और नवसस्येष्टि दोनों दृष्टियों के विधान हैं, क्योंकि उनसे इस अवसर पर वर्षाऋतु में विकृत वातावर्ण की विशेष संशुद्धि अभीष्ट है। वर्षा के अवसान पर दलदलों के सड़ने, मच्छरों के आधिक्य तथा आर्द्रता (नमी) के कारण ऋतुज्वर (मौसमी मलेरिया बुखार) आदि रोग बहुत फैलते हैं, इसलिए इस ऋतु के शारदीय पूर्णिमा, विजयादशमी और दीपावली इन तीन पर्वो के होम, यज्ञों से उन रोगों का अनागत प्रतीकार भी अभिप्रेत है।

जैसे शारदीय आश्विन पूर्णिमा को चाँदनी वर्षभर की बारह पौर्णमासियों में सर्वोत्कृष्ट होती है, उसी प्रकार कार्तिकीय अमावास्या का अन्धकार वर्ष की बारह अमावास्याओं में सघनतम होता है। इस अमावास्या के अन्धकार पर मृच्छकटिककार शूद्रक कवि की निम्नलिखित उक्ति पूरी उतरती है–

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि, वर्षतीवाञ्जनंनभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिविफलतां गता॥

अर्थ– अँधियारी अंगों पर पुत–सी गई है, आकाश अञ्जन–सा बरसा रहा है, दृष्टिशक्ति इस प्रकार निष्फल (बेकार) हो गई है जिस प्रकार असज्जन की सेवा व्यर्थ जाती है।

ऐसी घनी अँधियारी रात्रि में, नवीन सावनी सस्य के आगमन से प्रमुदित कृषिप्रधान भारतवर्ष में मानो वर्ष की प्रथम उक्त सस्य (फसल) के स्वागत के लिए दीपमाला का उत्सव मनाया जाता है। यह दीपमाला भी ग्रहों की वर्षाकालीन आर्द्रता के संशोषण से उनके संशोधन में सहायक होती है।

आज राजप्रासाद से लेकर रंककुटीर तक की शोभा अपूर्व है। प्रत्येक नगर और ग्राम का प्रत्येक आर्यघर परिमार्जन और सुधा (कली और चूना) वा पिंडोल मृत्तिका के लेपन से श्वेतरूप धारण किये हुए है। प्रत्येक अट्टालिका, आंगन और कक्ष्या (कोठरी) में दीपपंक्ति जगमगा रही है। धनियों के बहुमूल्य काचमय प्रकाशोपकरणों (झाड़ फानूस आदि शीशे आलाय) से लेकर दीनों के दीवलों (मृण्मय तेल के छोटे छोटे दीपकों) तक की कृत्रिम ज्योति प्रकृति के प्रगाढान्धकार से स्पर्धा (होड़ा–होड़ी) कर रही है। पुरुषोत्तमप्रिया के कृपापात्रों के भवन नाना व्यञ्जनों और विविध मिष्टान्नों की सरल सुगन्ध से परिपूर्ण हैं तो लक्ष्मी के कृपाकटाक्ष से वञ्चित दीनालय धान्य की खीलों से ही सन्तुष्ट हैं। संक्षेपतः आज प्रत्येक आर्यपरिवार ने अपने गृह को स्ववित्तानुसार मनोहर बनाने का भरपूर प्रयत्न किया है।
आज वर्ष के प्रथम शस्य–श्रावणी शस्य के शुभागमन के अवसर पर गृहों को शोभा और समृद्धि के आवासयोग्य बनाना स्वाभाविक और समुचित ही था। यही लक्ष्मी की पूजा थी, क्योंकि पूजा का वास्तविक भाव योग्य को योग्य स्थान का प्रदान ही है। आज नवशस्य के शुभागमनावसर पर शोभा और समृद्धि को उसका योग्य स्थान–प्रदान शोभा को समुचित स्थान और अवसर पर स्थापना ही उसकी वास्तविक पूजा है, किन्तु तत्त्व के परित्याग और रूढ़ि की आरूढ़ता के युग पौराणिक काल में लक्ष्मी की पूजा का यह तत्त्वांश अन्तर्दृष्टि से तिरोहित हो गया और उसके स्थान में उलूकवाहना की षोडशोपचारपूजा प्रचलित हो गई। उसके वाहन (मूढ़ता के साक्षात् स्वरूप उल्लू महाराज) ने उसके उपासकों की बुद्धि पर ऐसा अधिकार जमाया कि वे अपनी उपास्यादेवी के पदार्पण की प्रतीक्षा में दिवाली की सारी रात जागरण (रतजगा) करते हैं। प्रायः बुद्धि–विशारद भक्त शिरोमणि तो निद्रा के अपसारण के लिए रात्रिभर द्यूतक्रीड़ा में रत रहते हैं। मनरूकल्पित लक्ष्मी की प्रतीक्षा करते हुए भी साक्षात् लक्ष्मी (धन–सम्पत्ति) को वे द्यूत द्वारा दुत्कारते है, तिरस्कारपूर्वक उसको घर से धक्का देते हैं– **'अक्षैर्मा दीव्यः'** इस वद की कल्याणी वाणी का प्रत्यक्ष प्रतिवाद कर अनादर करते हैं।

आजकल के कलिकाल में वैदिक कालीन पर्व शारदीय नवसस्येष्टि दर्शष्टि का तो सर्वथा लोप हो गया है और केवल उसके बाह्य ष्डम्बर गृहपरिशोधन, परिमार्जन, दीपपंक्ति (दीपावली=दीपमाला) प्रकाशन, मिष्टान्न तथा लाजा–वितरण और घोर अविद्यान्धकार काल में प्रचारित द्यूत, दुराचार आदि उसके आनुषंगिक उपचार शेष रह गये हैं। नवान्नेष्टि के चिह्न होम तक की परिपाटी प्रायः उठ गई है। शायद ही किन्हीं बिरले सौभाग्यशाली गृहों में आज की रात्रि में होम होता होगा। हाँ, कहीं–कहीं गुग्गुल की धूप जलाने की रीति अवश्य प्रचलित है, जो प्रशंसनीय है।

दीपावली के विषय में भी विजयादशमी के समान यह एक कल्पित कथा चल पड़ी है कि इस दिन मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र बनवास से लौटकर अपनी राजधानी अयोध्या में वापस आये थे और उनकी प्रजा ने उस हर्षोत्सव के उपलक्ष्य में आज दीपावली की थी। उसका अनुकरण वर्तमान दीपावली चली आती है। विजयादशमी के विवरण में इस प्रसंग के उल्लिखित ऊहापोह से भले प्रकार प्रकट होता है कि यह विचार भी सर्वथा कपोल–कल्पित है, क्योंकि श्री रामचन्द्रजी रावण वध और लंका विजय के तत्काल बाद ही अयोध्या लौट आये थे और जब उक्त विवेचनानुसार रावणवध फाल्गुन वा वैशाख में हुआ था तो श्री रामचन्द्रजी का अयोध्या प्रत्यागमन कार्तिक मास में किस प्रकार सम्भव है? प्रतीत होता है कि दीपावली की दीपमाला के प्रकाश से श्रीरामचन्द्र के अयोध्या–प्रत्यागमन के हर्षोत्सव की कल्पना किसी कल्पनाकुञ्ज मस्तिष्क में हुई हो और उसी से यह दन्तकथा सर्वसाधारण में प्रचलित हो गई हो। वैदिक धर्मावलम्बी आर्यसामाजिक महाशयों का परमकर्त्तव्य है कि जहाँ वे इस प्रकार की ऐतिहासिक तत्त्व की तिरोधायक कपोलकल्पानाओं का निरसन करें, वहाँ शारदीय नवसस्येष्टि के वैदिक पर्व का प्रत्यावर्तन करके, उसके गृह–संशोधन और दीपावली प्रकाशन आदि अनुषंगों के सहित आगे पद्धति प्रदर्शित प्रकारानुसार उसके स्वरूप का आर्यजनता में प्रचार करें।

जैसाकि पर्वप्रादुर्भाव परिचय के प्रकरण में विवेचना की गई है, आर्यों का एक–एक पर्व किसी विशेष कृत्य के लिए उद्दिष्ट है और इस प्रकार उसका सम्बन्ध किसी–न–किसी एक विशेष वर्ग के साथ स्थापित है। जिस प्रकार वैदिक धर्म की चातुर्वर्ण्य और चतुराश्रमव्यवस्था चराचर जगत् में व्याप्त है, उसकी व्याप्ति केवल मनुष्यमात्र में ही नहीं है, प्रत्युत तिर्यग्योनियों और उद्भिजों में भी गुण–कर्मानुसार वर्ण और आश्रम विद्यमान हैं । पशुओं में गौ और वनस्पतियों में अश्वत्थ (पीपल) ब्राह्मण वर्ण के

अन्तर्गत हैं। इस विषय का यहाँ अधिकतर विस्तार, प्रकरणान्तर–प्रवेश का दोषावह होगा, इसलिए संकेतमात्र इतना ही पर्याप्त है। इसी प्रकार आर्यों के पर्वों में भी चातुर्वर्ण्यव्यवस्था पाई जाती है। श्रावणी उपाकर्म, स्वाध्याय से सम्बद्ध होने के कारण ब्राह्मणपर्व है। लोक में भी श्रावणी (सलूनो) ब्राह्मणों का पर्व कहलाती है। विजयादशमी क्षत्रियों की दिग्विजय यात्रा और क्षात्रधर्म के विकास से सम्बन्ध रखने के कारण क्षत्रियपर्व है और जनसाधारण भी उसको क्षत्रियों का पर्व कहता है। शारदीय नवशस्येष्टि वा दीपावली के पर्व का विशेष सम्बन्ध वैश्य कर्म (कृषि, वाणिज्य और उनकी अधिष्ठात्री समृद्धि की देवी लक्ष्मी) से है, इसलिए दीपावली वैश्यपर्व है और लोग भी उसको वैश्यों का पर्व मानते हैं। शूद्रपर्व होली का वर्णन उसके प्रकरण में यथास्थान होगा। दीपावली के अवसर पर जैसाकि ऊपर दिखलाया जा चुका है, नवीन सावनी–शस्य के अन्न से होम होता है। नवीन अन्न की लाजा (खीलें) और मिष्टान्न बाँटे जाते हैं। इसी अवसर पर व्यवसायी जन अपने बहीखातों का नवीन वर्ष आरम्भ करते हैं। आढ़त की दुकानों पर नये बहीखाते दीपावली से ही बदले जाते हैं। ये सब बातें इस पर्व का वैश्यत्व पूर्णरूपेण स्थापित करती हैं, परन्तु जिस प्रकार चारों वर्ण और उनके गुण–कर्म मुख्यतरू पृथक–पृथक् होते हुए भी, गौणरूप से एक–दूसरे के गुण–कर्मों का समावेश चारों वर्गों में रहता है–ब्राह्मणवर्ण की सम्पत्ति स्वाध्याय, क्षत्रियवर्ण की शूरता, वैश्य की समृद्धि और शूद्र का सेवाधर्म न्यूनाधिक चारों वर्गों के पुरुषों से सम्बन्ध रखते हुए भी सर्वसाधारण के सम्मिलित (सांझे के) पर्व भी हैं।

किन्तु इस दीपमाला की महारात्रि का महत्त्व एक महाघटना ने और भी बढ़ा दिया। इसी के सायंकाल विक्रमी सं. १६४० तदनुसार ३० अक्तूबर सन् १८८३ ई. मंगलवार को वीर विक्रम की २० वीं शताब्दी के अद्वितीय वेदोद्धारक और वर्तमान आर्यसमाज के संस्थापक तथा आचार्य महर्षि दयानन्द की उच्च आत्मा ने इस नश्वर शरीर का परित्याग करके जगज्जननी के क्रोड में आश्रयण का आनन्द प्राप्त किया था। महापुरुषों का देहावसान साधारण मनुष्यों की मृत्यु के समान शोकजनक और रुलाने वाला नहीं होता। उनका प्रादुर्भाव और अन्तर्धान दोनों ही लोककल्याण और आनन्दप्रदान के लिए होते हैं। महापुरुषों का इस लोक में आगमन तो लोकाभ्युदय के लिए प्रत्यक्ष ही है, किन्तु उनका इहलोक लीला–संवरण भी आनन्द का हेतु होता है। वे परोपकार में अपने प्राणों को अर्पण करते हैं। संसार के सुख के लिए अपने शरीर की बलि देते हैं, इसलिए जनता उनके बलिदान पर उनकी कीर्ति का कीर्तन और गुणगान करके एक प्रकार का आनन्दानुभव करती है। उनका बलिदान स्वयं जनता के लिए परोपकारार्थ देहोत्सर्ग का उत्तम आदर्श स्थापित करके, जनता में अनुकरण, उदाहरण तथा सत्सम्प्रदाय का प्रवर्तन और सुख का संयोजन करता है। इस पाञ्चभौतिक शरीर को त्यागते हुए उनकी आत्मा स्वयं भी सन्तोष और आनन्दलाभ करती है। सन्तोष इसलिए कि वे अपने इस लोक में आने का उद्देश्य पूर्ण करते हुए अपने इस लोक के जीवन को परोपकार में विसर्जन कर रहे हैं और आनन्द इसलिए कि उनका जीवात्मा प्राकृतिक बन्धनों से मोक्ष पाकर परमपिता के संसर्ग का संयोग प्राप्त कर रहा है और साथ ही अपने प्रभु की इच्छा को पूर्ण कर रहा है। श्प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण होश महर्षि दयानन्द के अन्तिम शब्द यही थे। किसी उर्दू के कवि ने कहा है 'राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।' इसलिए वैदिक धर्मावलम्बी आर्यों में मोहम्मदियों के समान महापुरुषों के अन्तर्धान की स्मारक तिथियों पर शोकातुर होने वा रोने पीटने की रीति नहीं है, प्रत्युत इन अवसरों पर उनकी गुणावली गाकर आत्मा में आनन्द का संचार किया जाता है। सिक्खों, कबीरपन्थियों, दादूपन्थियों आदि सनातनधर्मी आर्यसन्तान (हिन्दुओं) के अन्य सम्प्रदायों में भी अपने धर्मसंस्थापक गुरुओं के चोला छोड़ने के दिन भण्डारा चलाने की रीति है, जिसमें उनके शब्दकीर्तन करने और कड़ाहप्रसाद बाँटने का आनन्द मनाया

जाता है और शोक लेशमात्र भी नहीं होता। फलतः आर्यजाति में शोकप्रदर्शनार्थ कोई भी पर्व नहीं है, न ही शोकप्रदर्शन में किसी पर्वता (उत्सवता) का होना सम्भव है, अतएव मृत्यूत्सव, शोकोत्सव वा शोकपर्व पद ही असंगत और असम्बद्ध हैं। आर्यों के यहाँ किसी भी महात्मा के भौतिक देह–त्याग के दिन को पुण्य–तिथि (पवित्र तिथि) निर्वाण–दिन वा अन्तर्धान–दिवस कहते हैं।

अतः आज महर्षि दयानन्द के गुणानुवाद का अवसर उपस्थित है। महर्षि दयानन्द के आर्यजनता पर इतने असंख्य और अनन्त उपकार हैं कि मेरे–सदृश क्षुद्र लेखकों की निर्बल लेखनी उनके लिखने में असमर्थ है। जिस प्रकार समुद्र की विस्तृत बालुका में असंख्य और अनन्त कण होते हैं और जिस प्रकार दिनकर की किरणावली की गणना नहीं हो सकती, उसी प्रकार महापुरुषों की भी गुणावली गणनातीत और महिमा अप्रेमय होती है। विचारक उसपर विचार और मनन करते रहते हैं। कवि उसका कीर्तन करते रहते हैं। गायक उसके गान से स्वरसना को रसवती और पवित्र करते रहते हैं और संसारी जन उनसे शिक्षा ग्रहण करके अपना जन्म सुधारते रहते हैं। सच पूछिए तो इस संसृति–सागर में महात्माओं की चरितावली ही तरणी है और उनके आदर्श कर्म ही ज्योतिस्तम्भ हैं, जो भूले–भटके बटोहियों को मार्ग दिखलाते और पार लगाते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की जीवनी न जाने कितने कवीश्वरों के वाग्विलास का विषय बनी है। संस्कृत और हिन्दी काव्यों का प्रचुर भाग श्री रामचन्द्र के गुणानुवाद से ही व्याप्त है। रामकथा ने न जाने कितने पथिकों को सत्पथ दिखलाया है।

योगिराज श्रीकृष्ण की भगवद्गीता का कर्मयोग सहस्रों आलसियों और उदासियों को कर्ममार्ग में प्रवृत्त करके कर्मण्य और कर्मवीर बना रहा है। भगवान् तथागत का जीवन करोड़ो नर–नारियों और राव–रंकों के लिए शान्तिप्रद बना है। कहाँ तक गिनाएँ, संसार की सिरमौर भारत वसुन्धरा तो ऐसे अनेक महात्माओं के गुणगान से गुञ्जायमान है।

ऊपर कहा जा चुका है कि आज हमारे लिए भी एक महात्मा के गुणगान से अपने कर्णकुहरों को पवित्र करने और उनसे शिक्षा ग्रहण करने का सुयोग पुनरपि प्राप्त है। आओ, आज आचार्य दयानन्द के पवित्र चरित्र की कुछ विशेषताओं पर विचार करके अपने समय का सदुपयोग करें।

आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द के जीवन पर विचार करते हुए एक विचारक की दृष्टि से उस कर्मयोगी के नानारूप, जिनमें उस कर्मवीर ने अपनी सारी आयु व्यतीत कर दी, तिरोहित (ओझल) नहीं रह सकते। यहाँ लघु लेखक का अभिप्राय उनकी आद्यावस्था के उन मतपरिवर्तनों से नहीं है, जो सत्य की गवेषणा में उस जिज्ञासु व तत्त्वान्वेषी के विचारों में समय–समय पर होते रहे, प्रत्युत उनकी निश्चित कार्यपद्धति को ग्रहण कर चूकने और आर्यसमाज की संस्था को स्थापित करके क्रमबद्ध कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होने पर जिन विविध रूपों में उस उपकारी ने जनता का उपकार किया है, उनपर एक दृष्टि डालना ही इन पंक्तियों में अभीष्ट है।

॥ ओ३म् ॥

न आयु बंधन... न शिक्षा बंधन... न जाति बंधन

सर्वजातीय परिणय स्मारिका

अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़, दिव्यांग आदि वैवाहिक रिश्तों के लिये

सर्वजातीय परिणय स्मारिका मंगाये

9977987777, 9977957777

आर्य समाज मंदिर- संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016

॥ ओ३म् ॥

गृह प्रवेश, वास्तु यज्ञ, गायत्री यज्ञ, नाम करण संस्कार, मुण्डन संस्कार, विवाह आदि 16 संस्कारों के लिये संपर्क करें।

आर्य समाज विधि (वैदिक - पद्धति) से प्रमाण - पत्र सहित सजातीय / अंतर्जातीय विवाह - संस्कार करने हेतु मिलें

वैदिक पद्धति से अंत्येष्टि संस्कार निःशुल्क किये जाते है।

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016

कार्यालय : आर्य समाज - 219, संचार नगर एक्स, इन्दौर (म.प्र.) 452016

ई-मेल : aryasamajindore@yahoo.com, वेबसाइट : www.aryasamj.co ✆ 9977 95 7777, 9977 98 7777

नोट - यज्ञ (हवन) से संबंधित हवन पात्र, हवन कुण्ड, हवन सामग्री, हवन समिधा (लकड़िया) एवं वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

ऋषि, मुनि, साधु और संन्यासी में अंतर

भारत में प्राचीन काल से ही ऋषि मुनियों का बहुत महत्त्व रहा है। ऋषि मुनि समाज के पथ प्रदर्शक माने जाते थे और वे अपने ज्ञान और साधना से हमेशा ही लोगों और समाज का कल्याण करते आये हैं। आज भी वनों में या किसी तीर्थ स्थल पर हमें कई साधु देखने को मिल जाते हैं। धर्म कर्म में हमेशा लीन रहने वाले इस समाज के लोगों को ऋषि, मुनि, साधु और संन्यासी आदि नामों से पुकारते हैं। ये हमेशा तपस्या, साधना, मनन के द्वारा अपने ज्ञान को परिमार्जित करते हैं। ये प्रायः भौतिक सुखों का त्याग करते हैं हालाँकि कुछ ऋषियों ने गृहस्थ जीवन भी बिताया है। आईये आज के इस पोस्ट में देखते हैं ऋषि, मुनि, साधु और संन्यासी में कौन होते हैं और इनमे क्या अंतर है ?

ऋषि कौन होते हैं– भारत हमेशा से ही ऋषियों का देश रहा है। हमारे समाज में ऋषि परंपरा का विशेष महत्त्व रहा है। आज भी हमारे समाज और परिवार किसी न किसी ऋषि के वंशज माने जाते हैं।

ऋषि वैदिक परंपरा से लिया गया शब्द है जिसे श्रुति ग्रंथों को दर्शन करने वाले लोगों के लिए प्रयोग किया गया है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है वैसे व्यक्ति जो अपने विशिष्ट और विलक्षण एकाग्रता के बल पर वैदिक परंपरा का अध्ययन किये और विलक्षण शब्दों के दर्शन किये और उनके गूढ़ अर्थों को जाना और प्राणी मात्र के कल्याण हेतु उस ज्ञान को लिखकर प्रकट किये ऋषि कहलाये। ऋषियों के लिए इसी लिए कहा गया है "ऋषि" तु मन्त्र द्रष्टारा – न तु कर्तार – अर्थात ऋषि मंत्र को देखने वाले हैं न कि उस मन्त्र की रचना करने वाले। हालाँकि कुछ स्थानों पर ऋषियों को वैदिक ऋचाओं की रचना करने वाले के रूप में भी व्यक्त किया गया है।

ऋषि शब्द का अर्थ– ऋषि शब्द "ऋष" मूल से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ देखना होता है। इसके अतिरिक्त ऋषियों के प्रकाशित कृत्य को आर्ष कहा जाता है जो इसी मूल शब्द की उत्पत्ति है। दृष्टि यानि नजर भी ऋष से ही उत्पन्न हुआ है। प्राचीन ऋषियों को युग द्रष्टा माना जाता था और माना जाता था कि वे अपने आत्मज्ञान का दर्शन कर लिए हैं। ऋषियों के सम्बन्ध में मान्यता थी कि वे अपने योग से परमात्मा को उपलब्ध हो जाते थे और जड़ के साथ साथ चौतन्य को भी देखने में समर्थ होते थे। वे भौतिक पदार्थ के साथ साथ उसके पीछे छिपी ऊर्जा को भी देखने में सक्षम होते थे।

ऋषियों के प्रकार– ऋषि वैदिक संस्कृत भाषा से उत्पन्न शब्द माना जाता है। अतः यह शब्द वैदिक परंपरा का बोध कराता है जिसमे एक ऋषि को सर्वोच्च माना जाता है अर्थात ऋषि का स्थान तपस्वी और योगी से श्रेष्ठ होता है। अमरसिंह द्वारा संकलित प्रसिद्ध संस्कृत समानार्थी शब्दकोष के अनुसार ऋषि सात प्रकार के होते हैं ब्रह्मऋषि, देवर्षि, महर्षि, परमऋषि, काण्डर्षि, श्रुतर्षि और राजर्षि।

सप्त ऋषि– पुराणों में सप्त ऋषियों का केतु, पुलह, पुलत्स्य, अत्रि, अंगिरा, वशिष्ठ और भृगु का वर्णन है। इसी तरह अन्य स्थान पर सप्त ऋषियों की एक अन्य सूचि मिलती है जिसमे अत्रि, भृगु, कौत्स, वशिष्ठ, गौतम, कश्यप और अंगिरस तथा दूसरी में कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि, भरद्वाज को सप्त ऋषि कहा गया है।

मुनि किसे कहते हैं– मुनि भी एक तरह के ऋषि ही होते थे किन्तु उनमें राग द्वेष का आभाव होता था। भगवत गीता में मुनियों के बारे में कहा गया है जिनका चित्त दुःख से उद्विग्न नहीं होता, जो सुख की इच्छा नहीं करते और जो राग, भय और क्रोध से रहित हैं, ऐसे निश्चल बुद्धि वाले संत मुनि कहलाते हैं।

मुनि शब्द मौनी यानि शांत या न बोलने वाले से निकला है। ऐसे ऋषि जो एक विशेष अवधि के लिए मौन या बहुत कम बोलने का शपथ लेते थे उन्हीं मुनि कहा जाता था। प्राचीन काल में मौन को एक साधना या तपस्या के रूप में माना गया है। बहुत से ऋषि इस साधना को करते थे और मौन रहते थे। ऐसे ऋषियों के लिए ही मुनि शब्द का

प्रयोग होता है। कई बार बहुत कम बोलने वाले ऋषियों के लिए भी मुनि शब्द का प्रयोग होता था। कुछ ऐसे ऋषियों के लिए भी मुनि शब्द का प्रयोग हुआ है जो हमेशा ईश्वर का जाप करते थे और नारायण का ध्यान करते थे जैसे नारद मुनि।

मुनि शब्द का चित्र,मन और तन से गहरा नाता है। ये तीनों ही शब्द मंत्र और तंत्र से सम्बन्ध रखते हैं। ऋग्वेद में चित्र शब्द आश्चर्य से देखने के लिए प्रयोग में लाया गया है। वे सभी चीजें जो उज्जवल है, आकर्षक है और आश्चर्यजनक है वे चित्र हैं। अर्थात संसार की लगभग सभी चीजें चित्र शब्द के अंतर्गत आती हैं। मन कई अर्थों के साथ साथ बौद्धिक चिंतन और मनन से भी सम्बन्ध रखता है। अर्थात मनन करने वाले ही मुनि हैं। मन्त्र शब्द मन से ही निकला माना जाता है और इसलिए मन्त्रों के रचयिता और मनन करने वाले मनीषी या मुनि कहलाये। इसी तरह तंत्र शब्द तन से सम्बंधित है। तन को सक्रीय या जागृत रखने वाले योगियों को मुनि कहा जाता था।

जैन ग्रंथों में भी मुनियों की चर्चा की गयी है। वैसे व्यक्ति जिनकी आत्मा संयम से स्थिर है, सांसारिक वासनाओं से रहित है, जीवों के प्रति रक्षा का भाव रखते हैं, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, ईर्ष्या (यात्रा में सावधानी), भाषा, एषणा (आहार शुद्धि) आदणिक्षेप (धार्मिक उपकरणव्यवहार में शुद्धि) प्रतिष्ठापना (मल मूत्र त्याग में सावधानी) का पालन करने वाले, सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वंदन, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायतसर्ग करने वाले तथा केशलोच करने वाले, नग्न रहने वाले, स्नान और दातुन नहीं करने वाले, पृथ्वी पर सोने वाले, त्रिशुद्ध आहार ग्रहण करने वाले और दिन में केवल एक बार भोजन करने वाले आदि 28 गुणों से युक्त महर्षि ही मुनि कहलाते हैं।

मुनि ऋषि परंपरा से सम्बन्ध रखते हैं किन्तु वे मन्त्रों का मनन करने वाले और अपने चिंतन से ज्ञान के व्यापक भंडार की उत्पति करने वाले होते हैं। मुनि शास्त्रों का लेखन भी करने वाले होते हैं।

साधु कौन होते हैं– किसी विषय की साधना करने वाले व्यक्ति को साधु कहा जाता है। प्राचीन काल में कई व्यक्ति समाज से हट कर या कई बार समाज में ही रहकर किसी विषय की साधना करते थे और उस विषय में विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करते थे। विषय को साधने या उसकी साधना करने के कारण ही उन्हें साधु कहा गया।

कई बार अच्छे और बुरे व्यक्ति में फर्क करने के लिए भी साधु शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसका कारण है कि सकारात्मक साधना करने वाला व्यक्ति हमेशा सरल, सीधा और लोगों की भलाई करने वाला होता है। आम बोलचाल में साध का अर्थ सीधा और दुष्टता से हीन होता है। संस्कृत में साधु शब्द से तात्पर्य है सज्जन व्यक्ति। लघुसिद्धांत कौमुदी में साधु का वर्णन करते हुए लिखा गया है कि साध्नोति परकार्यमिति साधु – अर्थात जो दूसरे का कार्य करे वह साधु है। साधु का एक अर्थ उत्तम भी होता है ऐसे व्यक्ति जिसने अपने छह विकार काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर का त्याग कर दिया हो, साधु कहलाता है।

साधु के लिए यह भी कहा गया है "आत्मदशा साधे" अर्थात संसार दशा से मुक्त होकर आत्मदशा को साधने वाले साधु कहलाते हैं। वर्तमान में वैसे व्यक्ति जो संन्यास दीक्षा लेकर गेरुआ वस्त्र धारण करते हैं और जिनका मूल उद्येश्य समाज का पथ प्रदर्शन करते हुए धर्म के मार्ग पर चलते हुए मोक्ष को प्राप्त करते हैं, साधु कहलाते हैं।

संन्यासी किसे कहते हैं– सन्न्यासी धर्म की परम्परा प्राचीन हिन्दू धर्म से जुडी नहीं है। वैदिक काल में किसी संन्यासी का कोई उल्लेख नहीं मिलता। सन्न्यासी या सन्न्यास की अवधारणा संभवतः जैन और बौद्ध धर्म के प्रचलन के बाद की है जिसमे सन्न्यास की अपनी मान्यता है। हिन्दू धर्म में आदि शंकराचार्य को महान सन्न्यासी माना गया है।

सन्न्यासी शब्द सन्न्यास से निकला हुआ है जिसका अर्थ त्याग करना होता है। अतः त्याग करने वाले को ही सन्न्यासी कहा जाता है। सन्न्यासी संपत्ति का त्याग करता है, गृहस्थ जीवन का त्याग करता है या अविवाहित रहता है, समाज और सांसारिक जीवन का त्याग करता है और योग ध्यान का अभ्यास करते हुए अपने आराध्य की भक्ति में लीन हो जाता है।

हिन्दू धर्म में तीन तरह के सन्यासियों का वर्णन है– परिव्राजकः सन्यासी – भ्रमण करने वाले सन्यासियों को परिव्राजकः की श्रेणी में रखा जाता है। आदि शंकराचार्य और रामनुजनाचार्य परिव्राजकः सन्यासी ही थे। परमहंस सन्यासी यह सन्यासियों की उच्चत्तम श्रेणी है।

यति : सन्यासी : उद्‌येश्य की सहजता के साथ प्रयास करने वाले सन्यासी इस श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। वास्तव में संन्यासी वैसे व्यक्ति को कह सकते हैं जिसका आतंरिक स्थिति स्थिर है और जो किसी भी परिस्थिति या व्यक्ति से प्रभावित नहीं होता है और हर हाल में स्थिर रहता है। उसे न तो खुशी से प्रसन्नता मिलती है और न ही दुःख से अवसाद। इस प्रकार निरपेक्ष व्यक्ति जो सांसारिक मोह माया से विरक्त अलौकिक और आत्मज्ञान की तलाश करता हो संन्यासी कहलाता है।

उपसंहार– ऋषि, मुनि, साधु या फिर संन्यासी सभी धर्म के प्रति समर्पित जन होते हैं जो सांसारिक मोह के बंधन से दूर समाज कल्याण हेतु निरंतर अपने ज्ञान को परिमार्जित करते हैं और ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हेतु तपस्या, साधना, मनन आदि करते हैं।

वेद वरदान आर्य

आर्य वरदान धर्मयोद्धा कर्मवीर

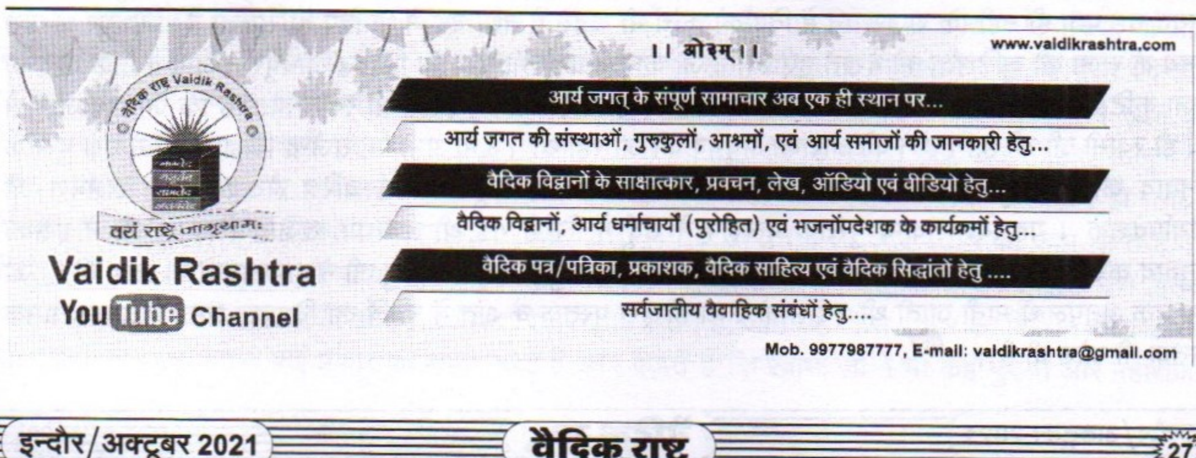

विष ही महर्षि की मृत्यु का कारण

—डॉ. अशोक आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के देहावसान का कारण जहाँ जोधपुर राज्य सहित अनेक कुचक्र गामी रहे, वहां दूध में विष भी उनके बलिदान का मुख्य कारण रहा । जब से महर्षि का देहावसान हुआ है, तब से ही जोधपुर के राज परिवार का यह प्रयत्न रहा है कि किसी प्रकार से जोधपुर राजघराने से एक ऋषि की हत्या का दोष हटाया जा सके । इस कड़ी में अनेक प्रयास हमारे सामने आते है जो उस राज परिवार के द्वारा हुए हैं तथा हो रहे हैं । इन पंक्तियों में मैं उन प्रयासों का तो वर्णन नहीं करने जा रहा किन्तु इस प्रयास के किसी न किसी रूप में जो आर्य ही सहभागी बनते हुए दिखाई देते हैं, समय समय पर ऐसे आर्यों की कलम से आर्यों के ही विरोध में किये जा रहे कुप्रयास को दूर करने का यतन आर्य समाज के महान लेखकों ने किया है, इन पंक्तियों में मैं भी कुछ एसा ही प्रयत्न करने का साहस कर रहा हूँ । लगभग चालीस वर्ष पूर्व एसा ही एक प्रयास श्री लक्ष्मीदत दीक्षित जी ने किया था, जिसका मुंह तोड़ उत्तर अबोहर से प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने अनेक लेखों के माध्यम से देते हुए यह सप्रमाण सिद्ध किया था कि महर्षि के देहांत का कारण विष ही था । इस अवसर पर उन्हों ने एक पुस्तक भी तैयार की थी महर्षि का विषपान अमर बलिदान । यह पुस्तक आर्य युवक समाज अबोहर ने प्रकाशित की थी । इस का प्रकाशन उस समय हुआ था, जब मैं आर्य युवक समाज अबोहर के प्रकाशन विभाग का मंत्री होता था अर्थात इस पुस्तक का प्रकाशन मैंने ही किया था । इस पुस्तक में स्वामी जी के देहावसान का कारण विषपान सटीक रूप से सिद्ध किया गया था तथा इससे पंडित लक्ष्मी दत्त दीक्षित जी की बोलती ही बंद हो गई थी । वह इस आधार पर जो पुस्तक लिखने जा रहे थे, उसे लिखने का विचार ही उनहोंने त्याग दिया । हमारे विचार में इतने सटीक प्रमाण आने के बाद आर्य समाज में यह विवाद खड़ा करने का प्रयास बंद हो जाना चाहिए था किन्तु आर्य जगत दिनांक २५ मई से ३१ मई २०१४ के पृष्ट ६ पर श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग पंचकुला का लेख जगन्नाथ ने महर्षि को दूध में विष दिया– एक झूठी कहानी के अंतर्गत यह लिखने का यत्न किया है कि महर्षि को विष देने की कथा झूठी है, के माध्यम से एक बार फिर यह विवाद खड़ा करने का यत्न किया है । मैं नहीं जानता कि गर्ग जी ने किस पूर्वाग्रह के कारण यह लिखा है किन्तु मैं बता देना चाहता हूँ कि इस लेख के लेखक को संभवतया या तो महर्षि के देहावसान के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान ही नहीं है, या फिर वह जान बूझ कर इस विवाद को बनाये रखना चाहते हैं ताकि कुछ उल्लू सीधा किया जा सके । लेखक ने स्वामी जी के रसोइये के नाम का विवाद पैदा करने का यत्न किया । स्वामी जी को दूध देने वाला जगन्नाथ था, धुड मिश्र था या कोई अन्य । नाम के विवाद में पड़ने की आवश्यकता नहीं है । नाम चाहे कुछ भी हो, प्रश्न तो यह है कि क्या स्वामी जी को विष दिया गया या नहीं ? लेखक ने बाबू देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय जी, पंडित लेखराम जी, पं. गोपालराव हरि जी द्वारा लिखित स्वामी जी के जीवन चरितों का वर्णन करते हुए लिखा है कि इन सब ने स्वामी जी को दूध पी कर सोते हुए दिखाया है किन्तु इस दूध में विष था या नहीं, यह स्पष्ट किये बिना ही लिख दिया कि यह दूध था न कि विष अथवा कांच । लेखक को शायद यह पता ही नहीं कि राजस्थान में विष को कांच भी कहते हैं तथा दूध में भी विष हो सकता है। जोधपुर के उस समय के राजा की कुटिलता को देखते हुए स्वामी जी को यह कहा भी गया था कि वह जोधपुर न जावें क्योंकि वहां का राजा कुटिल है, कहीं एसा न हो कि स्वामी जी को कोई हानि हो जावे । इससे भी स्पष्ट होता है कि जोधपुर जाने से पूर्व ही स्वामी जी की हानि होने की आशंका अनुभव की जा रही थी । अभी अभी प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने एक पुस्तक अनुवाद की है । पुस्तक का नाम है महर्षि दयानंद सरस्वती सम्पूर्ण जीवन चरित्र लेखक पंडित लक्षमण जी आर्योपदेशक । यह विशालकाय पुस्तक मूलरूप में उर्दू में लिखी गई थी तथा प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने इसका अनुवाद कर सन २०१३ में ही दो भागों में प्रकाशित की है । इस पुस्तक में जिज्ञासु जी ने वह सामग्री भी जोड़ दी है, जो अब तक अनुपलब्ध मानी जाती थी । इस के साथ ही इस पुस्तक के अंत में महर्षि का विषपान अमर बलिदान नामक पुस्तक भी जोड़ दी है ।

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु इस काल के आर्य समाज के सब से प्रमुख शोध कर्ता हैं, इस पर कहीं कोई दो राय नहीं है। इसलिए जब वह लिख रहे हैं महर्षि का विषपान अमर बलीदान तो यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी जी के देहावसान का कारण, बलिदान का कारण विषपान ही था। जिज्ञासु जी की पुस्तक के इस शीर्षक मात्र को देख कर ही कहीं अन्य किसी प्रकार की संभावना नहीं रह जाती। तो भी मैं यहाँ कुछ् प्रमाण देकर स्पष्ट करना चाहूँगा कि स्वामी जी के बलिदान का कारण केवल और केवल विष ही तो था अन्य कुछ नहीं। स्वामी जी को मृत्यु का भय न था महर्षि का विषपान अमर बलीदान के आरम्भ के दूसरे पहरे में जिज्ञासु जी लिख रहे हैं कि स्वामी जी मृत्यु से डरते न थे। वह मरना ओर जीना समान जानते थे। प्रसंग दिया है कि विष दिए जाने से थोडा समय पहले ही एक महाराजा की रानी का देहांत हो गया। कुछ व्यक्ति दूरदर्शिता दिखाते हुए प्रेमपूर्वक कहते हैं कि आप भी थोड़ा शोक प्रकट करने चले जाएँ। ऋषि कहते हैं कि मैं इस समय सांसारिक बंधन अपने पर कैसे लाद लूँ? मेरे लिए जीवन व मृत्यु एक सामान है। इतने वर्ष कैसे जी पाए? सत्य का प्रचार करते हुए ऋषि के अनेक विरोधी बन गए। अनेक बार उन्हें विष दिया गया, पत्थर फैंके गए, सांप फैंके गए और न जाने क्या क्या हुआ किन्तु फिर भी वह इतने वर्ष तक जीवित रहे, यह भी एक आश्चर्य है। स्वामी जी को म्रत्यु से लगभग दो वर्ष पूर्व ही अपनी मृत्यु का पूवानुमान हो गया था इस सम्बन्ध में उनहोंने एक पात्र के माध्यम से बारम्बार कर्नाला अल्काट को मेरठ में कहा था कि मैं सन १८८४ का वर्ष कदापि नहीं देख सकता। जोधपुर जाते समय २८ मई १८८३ को शाहपुराधिश को में लिखा था कि बिचके स्टेशनों पर पुकारने पर भी कोई गाड़ीवान अथवा सिपाही नहीं था। यदि ऐसे व्यक्ति हैं तो राजकाज की हानी होगी। स्वामी जी के साथ चारण अमरदास थे। पं. कमलनयन का कथन है कि जाते समय किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति ने स्वामी जी को सचेत करते हुए कहा भी था कि महाराज वहां कुछ नरमी से उपदेश करना क्योंकि वह क्रूर देश है। गर्ग जी ध्यान से पढ़िए यहाँ लक्ष्मण जी की कृति का अनुवाद करते हुए जिज्ञासु जी भी लिख रहे हैं कि प्रतिश्याय हो गया था। २६ सितम्बर अर्थात चतुर्दशी की रात्री को धौड मिश्र रसोइये से (जो शाहपुरा का रहने वाला था) दूध पीकर सोये। उसी रात उदर शूल तथा जी मिचलाने लगा। ३० सितम्बर को बहुत दिन निकले उठे। उठते ही पुनः वमन व जोर का शूल होने लगा, दस्त भी होने लगे। संदेह होने पर अजवायन का काढा पीया। वैद्यक वाले बताते हैं कि अजवायन विष का प्रभाव दूर करने के लिए होती है। सत्यरूपी अमृत की चर्चा करते करते महर्षि को सांसारिक मनुष्यों से विषपान करना पडा। आह! वह २६ की रात्री वाला दूध क्या था, मृत्यु का सन्देश था। दूध में चीनी के साथ संखिया को बारीक पिस कर दिया गया था। इस रोग का ज्यों ज्यों उपचार किया गया त्यों त्यों बढ़ता गया। गर्ग जी क्या आपने कभी एसा प्रतिश्याय देखा है जो वामन, दस्त व पेट शूल का कारण हो? नहीं तो फिर ऐसा झूठ क्यों घड़ रहे हो? इस रोग की जानकारी मिलने पर अच्छे चिकित्सक होते हुए भी अली मरदान खान को चिकित्सा का कार्य सौंप दिया गया। कहते हैं कि वह भी शत्रुओं की टोली का ही भाग था। जो औषध दी गई उसके लिए बताया गया था कि तीन चार दस्त आवेंगे किन्तु रात्री भर तीस से भी अधिक दस्त आ गए तथा दिन में भी आते रहे। दस्तों से स्वामी जी इतने क्षीण हो गए कि उन्हें मूर्च्छा आने लगी। पांच अक्तूबर तक अवस्था यहाँ तक पहुँच गई कि श्वास के साथ हिचकियाँ भी आने लगी। जब स्वामी जी ने छः अक्तूबर को कहा कि अब तो दस्त बंद होने चाहियें तो डाक्टर ने कहा कि दस्त बंद होने से रोग बढ़ने का भय है। बार बार कहने पर भी दस्त बंद न होने दिए गए। इस प्रकार अली मरदान खान की चिकित्सा १६ अक्तूबर तक चली। इस मध्य दस्तों के कारण स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। मुख, कंठ, जिह्वा, तालू, शिर तथा माथे पर छाले पड़ गए। बोलने में भी कष्ट होने लगा। बिना सहायता के करवट लेना भी कठिन हो गया। चिकित्सा काल में उसका प्रतिपल प्रतिक्षण बढ़ते रहना किसी बिगाड़ उत्पन्न करने वाले पदार्थ का काम था तथा वह किस संयोग से श्री महाराज की काया में जो पूर्ण ब्रह्मचर्य ताप व सुधारणाओं सुगथित था, प्रविष्ट हुआ? देश हितैषी पत्र अजमेर यह पत्र लिखता है कि भ्रातृवृन्द! यह विचारने का स्थान है, जाने यह किस प्रकार का विरेचन तथा ओषधि थी। इस पर बहुधा मनुष्य कई प्रकार की शंका करते हैं और कहते हैं कि स्वामी जी ने भी कई पुरुषों और महाराजा

प्रताप सिंह जी से इस विषय में स्पष्ट कह दिया था, परन्तु अब क्या हो सकता है ? लाख यत्न करो । स्वामी जी महाराज अब नहीं आ सकते । जो हुआ, सो हुआ परन्तु हम को इतना ही शोक है कि स्वामी जी महाराज ने किसी आर्य समाज को सूचित न किया । यदि यह वृत्तांत उस समय जाना जाता तो यह रोग इतनी प्रबलता को प्राप्त न होता।" जब स्वामी जी का स्वास्थ्य गिरता ही चला गया तो पं. देवदत लेखक तथा लाला पन्नालाल अध्यापक जोधपुर ने स्वामी जी से कहा की यह स्थान छोड़ देना चाहिए । स्वामी जी ने इस संबंधमें महाराज को लिखा । महाराज ने कहा की इस दिशा में यहाँ से जाने से जोधपूर की अपकीर्ति होगी किन्तु स्वामी जी के न मानने पर वह चुप हो गया । स्वामी जी की चिकित्सा शुश्रुषा करने वाले लोग तो वही जो उनकी मौत ही चाहते थे । यदि जेठमल न जाते तो स्वामी जी का देहांत तो जोधपुर में ही हो जाता और संस्कार की सूचना भी आर्यों को न होती । जेठमल जी ने अजमेर जा कर सभासदों को सूचित किया । पीर जी हकीम को सब बताया, उनहोंने कुछ औषध दि तथा बताया की स्वामी जी को संखिया दिया गया है । (देखें महर्षि का विषपान अमर बलिदान) पीर जी की ओषध से कुछ लाभ मिला । मूर्छा और हिचकी कम हो गई । हस्ताक्षर करने लग। आबू में डॉ. लक्ष्मण दास जी के उपचार से भी लाभ हुआ । हिचकिया व दस्त बंद हो गए किन्तु २३ अक्तूबर को त्यागा पत्र देने पर भी कड़ी बरतते हुए अजमेर भेज दिया । मार्ग में मिलाने वालों को आप सजल नेत्रों से स्वामी जी का हाल सुनाते थे । यहाँ से स्वामी जी को अजमेर लाया गया । स्वामी जीके पुरे शरीर पर छले पद गए थे तथा सर्दी में भी गर्मी अनुभव करते थे । अजमेर आने पर पीर जी ने जांच करके स्पष्ट कहा कि विष दिया गया है । स्वामी जी ने जल पीया, कटोरे में मूत्र किया जो कोयले के सामान काला था। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी इस जीवन चरित्र के इतिहास दर्पण के अंतगत पृष्ट ६५५ पर लिखते हैं कि १. ऋषि जब जोधपुर जाने लगे तो सभी शुभचिंतकों ने वहां जाने से रोका । प्राणों के निर्मोही दयानंद ने किसी की एक न सुनी । शीश तली पर रखकर जोधपुर जानेकी ठान ली। २. ऋषि के जोधपुर पहुँचाने के २६ दिन बाद जसवंत सिंह महाराजा जोधपुर दर्शनार्थ पधारे । यह भी एक समझाने वाला तथ्य है । ३. शाहपुरा के श्री नाहर सिंह तथा अजमेर के कई भक्तों ने कहा कि आप वहां जा रहे हैं । वेश्यागमन, व्यभिचार का खंडन मत करना । यह तथ्य भी सामना रखना होगा । तथा ऋषि ने इन्हें जो उतर दिया वह भी ध्यान में लाना होगा । ४. महाराजा प्रताप सिंह के जीवन चरित्र में भी स्वामी जी का कहीं वर्णन तक न होना भी इस बात को बल देता है । यहाँ तक कि उनके किसी लेख में स्वामी जी का नाम तक नहीं मिलता । ५. सर प्रताप सिंह अंग्रेज का पिट्ठू था, ऋषि भक्त नहीं । अंग्रेज अपने सब से बड़े चाटुकार निजाम हैदराबाद से भी कहीं अधिक उपाधियाँ सर प्रताप सिंह को दीं । ऋषि भक्त पर तो अंग्रेज मोहित नहीं हो सकता था । ६. राजा के सब चाकर आज्ञाकारी और विश्वस्त होते हैं । महर्षि तो शाहपुरा के दिए सब चाकरों को निकम्मा बताते हैं । (यह बात ऋषि दयानंद के पात्र और विज्ञापन के पृष्ठ ४२२–४२३ पर अंकित है । ७. जिस डॉ. अलीमर्दान खान से जोधपुर में उपचार कराया गया था, वह चाटुकार तथा तृतीय श्रेणी का सहायक डाक्टर था । उसने जान बुझ कर एसा उपचार किया कि स्वामी जी बच न सकें। ८. ऋषि की रुग्णता का समाचार बाहर न निकालने देना भी उनके दोष का कारण रहा । महर्षि की साड़ी योजना बनाने वाला राजपरिवार मजे से महलों में सोता रहा । स्वामी जी को रोग शैय्या पर छोड़ महाराज प्रताप सिंह घुड दौड़ के लिए पूना चले गए । ९. स्वामी जी को अंतिम समय अजमेर लाने वाले जेठमल जी ने कविता में लिखा रोम रोम में विष व्याप्त हो गया । यह तो साक्षात सत्य है जिसने अपनी आँखों से देखा उसका ही लिखा है । १०. जब पंडित लेखराम जी स्वामी जी के जीवन की खोजा में जोधपुर गए तो राजा के गुप्तचर छाया की तरह पंडित जी के पीछे क्यों रहे ? खोज में बाधा क्यों डाली ? ११. सर प्रताप सिह स्वयं कहते थे । कोई नन्हीं को भगतन व वैष्णव बताकर सिद्धकराने में लगा है तो कोई जोधपुर में विष देने की घटना को सिरे से खारिज कर रहा है । राजपरिवार का एक ट्रस्ट है । उन्होंने मुठ्ठी में कई लेखक कर रखे है । ऐसा सुनाने में आया है । एक दैनिक में विषपान की घटनाक प्रचारित करने का दोष पंजाब के महात्मा दल पर लगाया गया । लिखा गया की पंडित लेखराम जी का ग्रन्थ छपने लाहौर मांस पार्टी के स्तम्भ प्रताप सिंह की निंदा के लिए यह प्रचार किया गया ।

झूठ झूठ ही होता है जब राजस्थान के एक दैनिक में यह लेख छापा तो राजस्थान के किसी व्यक्ति ने इस मिथ्या कथन का प्रतिवाद नहीं किया । तब प्र. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखा की पं. लेखराम जी का ग्रन्थ छपने से पूर्व जोधपुर में अकाल पड़ा था । तब लाला लाजपत राय जी ने लाला दीवानचंद को जोधपुर सहायता कार्य के लिए भेजा । उस समय सर प्रताप सिंह ने स्वयं जोधपुर में ऋषि जी को विष देने की घटना पर बड़ा दुःख प्रकट किया था। यह बात लाला दीवानचंद जी की आत्मकथा मानसिक चित्रावली में दी गयी है । इस दीवान चाँद ने दुनिया के नोऊ महापुरुष नामक उर्दू पुस्तक में ऋषि को जोधपुर में विष दिए आने की चर्चा की है नन्हीं को भी वैश्य लिखा है । १२ राजस्थान के यशस्वी इतिहासकार गौरिश्नकर हिराचंद ओझा ने भी ऋषि के बलिदान का कारण विषपान ही माना है । यह सब दयानंद क्मेमोरेश्ना वाल्यूम के पृष्ट ३७० पर देखें । राधास्वामी मत दयालबाग के गुरु हुजुर जी महाराज भी लिखते हैं कि जसवंत सिंह की बद्खुला तवायफ नन्ही जान । नन्ही जान के प्रतिशोध का परिणाम था कि दयानंद के दूध में विष पिस कर शक्कर डाल कर दिया गया और वह घातक सिद्ध हुआ । १२. अजमेर के हकीम पीर अमाम अली जी ने स्पष्ट कहा था की संखिया दिया गया है। १३. राजस्थान के तत्कालीन इतिहासकार जगदीश सिंह गहलोत, मुंशी देवी प्रसाद, नैनुरम ब्रह्मभात्त आदि सब एक स्वर से ऋषि के बलिदान का कारण विष मानते हैं चाँद के प्रसिद्द मारवाड़ अंक से ऋषि के विषपान के प्रमाण जिज्ञासु जी ने दिए थे । १४. ऋषि को मारने के षड्यंत्र में कई व्यक्ति सम्मिलित थे । इन में से एक व्यक्ति खुल्लामाखुक्का ऋषि की हलाकत (हत्या) का श्रेय लेते हुवे गर्व से लिखता है कि उसे तो अल्लाह से ऋषि के मारे जाने की पहले से जानकारी मिल चुकी थी । मिर्जई मत का पैगम्बर मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ऋषि की हकालत को अपनी नुब्बुवत का आसमानी निशाँ प्रमाण आ था । उसने अपनी आसमानी किताब "हकीकत उल वाही" के ५१–५२ पृष्ठों की निर्देशिका के पृष्ट २४ पर दो बार महिषी के मरवाने का श्रेय बड़ी शान से लेता है । इस पंथ का पालन पौषण अंग्रेज सरकार ने किया । १५. वारहट क्रिश्चन सिंह जी का जीवन और राजपुताना इतिहास अभी छपा है इस में इस प्रकार लिखा है– ब्राह्मणों ने इनके रसोइदर को मिला कर स्वामी दयानंद सरस्वती को जहर दिलाया । १६. डॉ. भवानी लाल भारतीय जी ने नन्ही को महाराज की उप पत्नि कहा है। यदि इसे सत्य मान लें तो भी जोधपुर महाराज की उपपत्नी के इस अपराध में शामिल होना सिद्ध होता है क्योंकि सब ने माना है कि एक मुख्य पात्र सबने माना है तो राजपरिवार विष दिए जाने के षड्यंत्र से अलिप्त कैसे हो गया ? यदि वह उप पत्नी थी तो सर प्रताप सिंह ने उसे जसवंत सिंह के निधन पर राजभवनों से उसे क्यों निकलवाया । १७. श्री राम शर्मा ने कुतर्क दिया की गोपालराव हरी ने ऋषि जीवन में विष देने की चर्चा नहीं की । क्या इससे एक सरकारी अधिकारी कि विवश्ता नहीं दिखाती, जबकि मौके के इतिहासकार जो उस समय जोधपुर व अजमेर में थे, की साक्षी असत्य हो जाती है क्या ? १८. लाखों की सम्पदा रखने वाली नन्ही पर जब विष देने का आरोप लगाया गया, इस आरोप लगाने वालों में महात्मा मुंशी राम, मास्टर आत्माराम, लक्षमण जी, महाशय कृष्ण जी अदि पर उसने मानहानि का अभियोग क्यों न किया ? १६. भक्त अमिचंद को यह क्यों लिखना पडा – अमिचंद एसा होना कठिन है, धर्म न हारा कष्ट उठाए, घबराये, उय्दी वश खाई।। महर्षि का विषपान अमर बलिदान में दि कविता की अंतिम पंक्ति इस प्रकार है– दियो विष हा हा हा स्वामी हमारो चली बसों ।। २० बम्बई की एक मेडिकल संस्था ने भारत सरकार के अनुदान से डॉ. सी के पारिख का एक ग्रन्थ सिम्पलिफाईड टेक्स्ट बुक आफ मेडिकल ज्युरुपुदेंस एंड टेक्नोलॉजी प्रकाशित करवाया है उसके पृष्ट ६४३। ६७३। ६७४ पर बड़े विस्तार से विष दिए जाने पर शारीर में होने वाली प्रतिक्रियाओं का वर्णन किया गया है । कोई भी सत्यान्वेषी उन्हें पढ़ कर यही निर्णय देगा कि महिषी जी महाराज के अंतिम दिनों में जीना शारीरिक व्याधियों का कष्ट भोगना पड़ा वे सब विष दिए जाने के करण उतपन्न हुईं। विश्वबंधू शास्त्री तथा श्रीराम शर्मा, दोनों ही मूलराज को अपना गुरु मानते हैं किन्तु मूलराज जैसे कुटिल ऋषि द्रोही ने मरते दम तक कभी यह नहीं कहा व लिखा कि ऋषि को विष नहीं दिया गया । यहाँ तक कि महर्षि को विष देने के विरोधी श्रीराम शर्मा द्वारा शोलापुर से प्रकाशित प्री. बहादुर मॉल की एक पुस्तक से विष दिए जाने के प्रमाण प्रकाशित किया।

इससे भी उनके दोहरे चरित्र का पता चलता है । होश्यारपुर के विश्वबंधु, सूर्यभान कुलपति की पुस्तकों में भी विषपान की घटना निकला आई। महात्मा हंसराज की एक पुस्तक से भी इस सम्बन्ध में प्रमाण मिला । प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु आर्य जगत के एक सर्वोतम शोध करता हैं । उन्होंने पुस्तक लिखी महर्षि का विषपान अमर बलिदान । इस पुस्तक तथा इससे पूर्व लिखे लेखों के आधार पर श्रीराम शर्मा, लक्शामिदत दीक्षित आदि टिक न सके तो फिर अब गर्ग जी को यह विवादित कार्य फिर से आरम्भ करने की आवश्यकता क्यों हुई तथा इस झूठ को फिर से फैलाने का प्रयास क्यों किया गया तथा यह भी पुनः आर्य जगत में ही क्यों किया गया ?, इस के पीछे अवश्य कोई साजिश है, इस साजिश का पर्दाफाश होना आवश्यक है ताकि भविष्य में कोई एसा अनर्गल प्रलाप पुनः लाने का साहस न कर सके । ऊपर मैंने जो कुछ लिखा है, वह सब जिज्ञासु जी की पुस्तक के आधार पर ही लिखा है यदि विस्तार से जानाना चाहें तो इस पुस्तक तथा प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी द्वारा अनुवाद की गई लक्ष्मण जी वाली ऋषि जीवन का अनिम भाग अवश्य पढ़ें । यह भी जाने की विष किसने दिया, उसके नाम का निर्णय करना हमारा काम नहीं है, हमारा काम है की वास्तव में विष दिया गया या नहीं । मुद्दे से न भटकते हुए विषपान तक ही सीमित रहते हुए जाने तो पता चलता है कि स्वामी जी की मृत्यु का कारण वास्तव में विषपान ही था जो जोधपुर राजघराने में एक साजिश के तहत दिया गया और इस साजिश में बहुत से लोग यहाँ तक कि अंग्रेज भी शामिल था ।

डॉ. अशोक आर्य
१०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी, २०१०१० गाजियाबाद
दूरभाष 01202773400, 09718528068

॥ ओ३म् ॥

9977957777 9977987777

यज्ञो वै विष्णुः

यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म

- दैनिक यज्ञः ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ (हवन)
- साप्ताहिक यज्ञः सत्संग (रविवार)
- वैदिक दिव्य यज्ञ सत्संग (प्रत्येक माह अंतिम रविवार)
- पारिवारिक यज्ञ सत्संग (परिवारों में निःशुल्क यज्ञ सत्संग)

स्वर्ग कामो यजेत्

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि

विशेष अवसरो पर यज्ञ (हवन) करवाएँ

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, गृह प्रवेश, गृह शांति, शांति यज्ञ, वास्तु यज्ञ, गायत्री यज्ञ, श्रीयज्ञ, सरस्वती यज्ञ, संजीवन यज्ञ, मेधा यज्ञ, वाणिज्य यज्ञ, महामृत्युंजय यज्ञ, पुण्यतिथि यज्ञ, उठावना (चौथा), चतुर्वेद शतक यज्ञ एवं वेद प्रवचन, गीता-प्रवन, उपनिषद्-कथा आदि सुअवसरों पर आचार्यो को आमंत्रित कर लाभ प्राप्त करें।

16 संस्कारों-यज्ञों को करवाएँ

पुंसवन संस्कार, सीमतोन्नयन संस्कार, जातकर्म संस्कार, नामकरण, निष्क्रमण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, चूडाकर्म संस्कार (मुण्डन), कर्णविध संस्कार, उपनयन संस्कार (जनेऊ), समावर्तन संस्कार, विवाह संस्कार एवं अत्येंष्टि आदि सभी 16 संस्कारों हेतु संपर्क करें।

कार्यालयः आर्य समाज मंदिर- 219, संचार नगर, एक्स., कनाड़िया रोड़, इन्दौर-452016
E-mail: aryasamajindore9977957777@gmail.com, web.: www.aryasabha.com

9977957777, 9977967777, 9977987777

नोट- यज्ञ (हवन) से संबंतिधत हवन पात्र, कुण्ड, हवन सामग्री, हवन समिधा (लकड़िया) एवं वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है

।। ओ३म्।।

गुरु विरजानंद वैदिक ट्रस्ट (पंजी.)

द्वारा संचालित

गुरु विरजानंद वैदिक गुरुकुल, इन्दौर (म.प्र.)

को

आपका सहयोग अपेक्षित है।

9977987777

गूगल पे, फोन पे, पेटीएम में प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

अथवा

सहयोग राशि के लिये

Scan QR to pay

GURU VIRJANAND VAIDIK GURUK U/O MDAVGPS

INDORE | TID: 62240620

Customers can scan the QR with any BharatQR/UPI enabled app

Bank Name	-	HDFC
Bank	-	Guru Virajanand Vaidik Trust
A/C	-	50200034013635,
IFSC	-	HDFC0001772

Bank Name	-	HDFC
Bank	-	Guru Virjanand Vaidik Gurukul
A/c	-	50200061946934
IFSC	-	HDFC0001772

PhonePe Google Pay Paytm 9977987777

आपका अमूल्य सहयोग वैदिक संस्कृति, सनातन धर्म व समाज की दशा व दिशा निर्धारण करने में महती भूमिका निभाएगा। धन्यवाद!

नोट- गुरुकुल, गौशाला, वानप्रस्थाश्रम, पंचगव्य-प्राकृतिक-आयुर्वेदिक चिकित्सालय हेतु भूमि क्रय करना है। जिससे की सभी कार्य सुगमता से हो सके अत: इस महायज्ञ में आर्थिक सहयोग अधिक से अधिक कर पुण्य के भागी बनें।

कार्यालय- गुरु विरजानंद वैदिक गुरुकुल

आर्य समाज- 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016
Web.: www.guruvirjanandgurukul.com, E-mail: guruvirjanandgurukul@gmail.com
✆ 9977967777, 9977987777

RNI Registration No- RNI/MPHIN/2009-28723 October 2021 Postal Registration No.MP/IDC/1533/2020-22

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार द्वारा आर.टेक. ग्राफिक्स 864/9, नेहरु नगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड़, इन्दौर से प्रकाशित। न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा। संपादक : आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

मुद्रण दिनांक– प्रत्येक माह की 28 तारीख प्रेषण दिनांक– प्रत्येक माह की 30 तारीख प्रेषण कार्यालय– आर.एम.एस. इन्दौर डाकघर - 452001